इकाई लेखन का ढाँचा

1. विषय
2. सार/विषय क्षेत्र
3. विषय-प्रवेश
4. विषय प्रतिपादन

शीर्षक

(पाठ, दृश्य-श्रव्य, रेखांकन)

5. विवेचन
6. निष्कर्ष
7. प्रश्नोत्तर
8. अभ्यास प्रश्न (संवाद के बिन्दु)
9. प्रयोगादि (रचनात्मक योगदान)
10. संदर्भ

Unit Contents:

4 Sub-Units

1. शब्द निर्माण की प्रक्रिया
2. पदबंध
3. मानक वर्तनी
4. वाक्य शोधन

शब्द निर्माण की प्रक्रिया

शब्द निर्माण की प्रक्रिया

शब्द निर्माण की प्रक्रिया सभी समुन्नत भाषाओं में हुआ करती है.इस प्रक्रिया के माध्यम से अनेक नवीन शब्द बनते है.विद्वानों ने शब्द पर विचार करते हुए अर्थवान ध्वनियों के समूह को ही शब्द माना है.शब्द भाषा की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है.प्रत्येक भाषा में शब्दों का व्यापक भण्डार है पर इनकी निर्मिति किस प्रकार होती है,व्याकरण के अंतर्गत इस पूरी प्रक्रिया पर विचार किया गया है.ऐसे अनेक शब्द हैं जिन्हैं पहली बार सुनकर भी हम उनका प्रयोग न केवल सहजता से करने लगते है बल्कि उससे बनने वाले नये शब्दों का प्रयोग भी निरंतर करते रहते है.

शब्द का सम्बन्ध इस इकाई की उप इकाइयों से ही नहीं भाषा की मूल सरंचना से भी है.शब्द को अर्थ के स्तर पर भाषा की सबसे छोटी और स्वतंत्र इकाई माना जाता है.वाक्य.उपवाक्य,पदबन्ध सभी के मूल में शब्द है.रचना के आधार पर जहां इसके रूढ् ,यौगिक और योगरूढ जैसे भेद माने जाते हैं वहीं इतिहास के आधार

पर इसके चार भेद (तत्सम,तद्भव,देशज,विदेशी)माने जाते है.

शब्द के मुख्य रूप से दो भेद माने जाते है------सामान्य(आधारभूत शब्दावली) तथा पारिभाषिक शब्दावली

आधारभूत शब्दावली किसी भी भाषा के आधारभूत शब्दों से बनती है.भाषा सीखते समय सर्वप्रथम आधारभूत शब्दों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है.यूं तो प्रत्येक भाषा का अपना शब्द भण्डार होता है पर उसके निरंतर संवर्धन हेतु अनेक नियमों की आवश्यकता होती है.

इस संबंध में भारतीय एवं पश्चिमी दोनों दृष्टिकोणों की परख आवश्यक है.

भारतीय दृष्टिकोण के अंतर्गत शब्द निर्माण की प्रक्रिया पर विचार करते हुए धातु ,उपसर्ग,प्रत्यय,समास को महत्वपूर्ण माना गया है.

भाषा एक सामाजिक संस्था है जिसका निर्माण व्यक्ति एवं समाज के द्वारा होता है.समाज के विकास के साथ-साथ भाषा का भी विकास होता है.शब्दों का निर्माण भी इसी प्रक्रिया से होता है.कुछ शब्द छूट जाते हैं ,कुछ नया रूप धारण कर लेते हैं.कुछ पुराने अर्थ तत्व को छोडकर नवीन अर्थ ग्रहण कर लेते हैं.शब्द निर्माण की प्रकिया के संदर्भ में यह जानना आवश्यक है कि शब्दों की निरूक्ति ,प्रकृति और प्रत्यय के बल पर ही होती है

. भाषा विज्ञान में शब्द को 'प्रातिपदिक' कहा गया है.शास्त्र के इस शब्द को भाषा विज्ञान ने भी मान्य माना है.प्रातिपदिक का अर्थ है ---शब्द का ऐसा रूप जिसके साथ संबंध तत्व न लगाया गया हो यथा---राम,घर,मकान आदि.इन्हें प्रकृति भी कहा जाता है.इनके निर्माण की प्रक्रिया इस प्रकार है--------

धातु

धातु के महत्व का उल्लेख क्रिया के अंतर्गत किया गया है जो शब्दों की व्युत्पत्ति का मूल स्रोत है.धातु से ही नए शब्दों का निर्माण संभव है.धातु अपने मूल अर्थ के साथ निरंतर शब्दों का विस्तार करती है.

अंग्रेजी में धातु के लिए ROOT शब्द का प्रयोग किया जाता है.हिन्दीशब्दानुशासन में किशोरी दास वाजपेयी ने धातु का वैशिष्टय बताते हुए लिखा ------- 'हिन्दी में सभी धातुए स्वरांत हैं,व्यंजनांत नहीं'

डां वासुदेव नंदन प्रसाद ने 'आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना' में कहा कि 'सामान्य रूपों में से 'ना' को हटाकर धातु का रूप ज्ञात किया जा सकता है.

परंतु धातु के भूतकालिक व भविष्यकालिक रूप के साथ यह बात लागू नहीं होती------

गिरा ---- गिराना,गिरवाना (वर्तमान)

--- गिराया , गिरवाया (भूत)

---- गिराएगा, गिरवाएगा (भविष्य)

पढ -------- पढ्ना, पढवाना (वर्तमान)

---- पढा, पढ्वाया,पढाया (भूत)

----- पढाएगा,पढ़्वाएगा (भविष्य)

धातु के दो भेद माने जाते हैं---1) मूल धातु 2) यौगिक धातु

मूल धातु---- यह स्वतंत्र धातु है.इसके लिए किसी अन्य उपसर्ग अथवा प्रत्यय या शब्द की आवश्यकता नहीं होती.मूल धातु स्वयं सार्थक अर्थ का निर्वाह तो करती ही है वाक्य को भी सार्थकता प्रदान करती है---

जैसे–वह खाना खा रही है (खा धातु)

वह घर जा रही है (जा धातु)

वह टी.वी. देख रही है (देख धातु)

वह पानी पी रही है (पी धातु)

यौगिक धातु----यौगिक धातु से नवीन शब्दों का निर्माण होता है. दो या दो से अधिक धातुओं में प्रत्यय लगाने से जिस क्रिया का निर्माण होता है ,उसे यौगिक धातु कहते है.---------

1-चलना से चलाना या चल देना

2- हंसना से हंसाना

यौगिक धातु तीन प्रकार से बनती है---

1-धातु में प्रत्यय लगाने से बनने वाली धातु-सकर्मक या प्रेरणार्थक धातु

2-कई धातुओं को जोडने से संयुक्त धातु बनती है.

3-संज्ञा या विशेषण से बनने वाली नामधातु

उदाहरण

प्रेरणार्थक धातु ---गिरना- गिरवाना,

--काटना- कटवाना

--करना–कराना, करवाना

नाम धातु ----- गर्म–गरमाना

बात–बतियाना

हाथ–हथियाना

संयुक्त धातु---- रो चुका

लेट जाना

गिर पड़्ना

उपसर्ग

उपसर्ग शब्द निर्माण की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण चरण है.धातु से पूर्व प्रयुक्त होने पर उपसर्ग शब्द के अर्थ में अंतर उत्पन्न करता है, इससे अर्थ का अपकर्ष , उत्कर्ष अथवा परिवर्तन होता है यथा ---

राग धातु में अनु प्रत्यय जोड़ने से ----- अनुराग

वि प्रत्यय जोड़ने से ------ विराग

अंग्रेजी में इसे AFFIX कहा जाता है जिसके तीन भाग है --

1) Prefix 2) Infix 3) Sub-fix

हिन्दी में इसे उपसर्ग, मध्यसर्ग,प्रत्यय कहा जाता है .

यह धातु के साथ प्रयुक्त होते हैं और इनकी विशेषता है कि धातु के साथ जुड़कर यह उन्हें तो नया अर्थ देते ही हैं स्वयं भी अर्थवान हो जाते हैं----

हार---- आहार, प्रहार, विहार, संहार, मनुहार

चार--- संचार, विचार ,आचार ,लाचार आदि

यह भी सत्य है कि विद्वानों ने उपसर्ग की कोटि निर्धारित करते हुए उसे सकारात्मक और नकारात्मक अर्थ की रचना के आधार पर विभाजित किया है परंतु कई बार नकारात्मक लगनेवाला उपसर्ग भी सकारात्मक अर्थ के निर्माण में सहायक होता है----

परा(नकारात्मक उपसर्ग) पराधीन,पराजय,पराभव परंतु इसी से पराक्रम,परामर्श का निर्माण भी होता है.

प्रत्यय

;प्रत्यय शब्द निर्माण की प्रक्रिया का दूसरा चरण है.प्रत्यय शब्दों की व्याकरणिक कोटिमें भी परिवर्तन उत्पन्न करते है.विद्वानों ने प्रत्यय का विभाजन दो प्रकार से किया है----

1-**रूप साधक प्रत्यय**–संज्ञा अथवा विशेषण के साथ लगने वाले प्रत्यय रूप साधक प्रत्यय है.

उदाहरण–संज्ञा–गाना +वाला=गाने वाला

होना+हार=होनहार

रखना+ऐया=रखैया

छलना+इया=छलिया

खेना+वैया=खेवैया

विशेषण

भू+क्त=भूत

मद+क्त=मत्त

विद+मान=विद्यमान

खिद+क्त(न)=खिन्न

विद्वानों ने इसे तद्वित प्रत्यय भी कहा है.हिन्दी में प्रत्यय एवं उपसर्ग दोनों ही विविध भाषाओं जैसे (संस्कृत,हिन्दी,उर्दू) से लिये गए है.

संस्कृत ;शाल+ईन=शालीन

बाल+क=बालक

बुद्धि+मान=बुद्धिमान

हिन्दी---

कीमत+ई=कीमती

बच्चा+पन=बचपन

इया=बछिया

ईला=रंगीला

हरा=छरहरा

उर्दू

दुकान+दार=दुकानदार

घडी+साज़=घडीसाज

नकाब+पोश=नकाबपोश

यहां यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जिस भाषा का शब्द हो,उसमें उसी प्रकार के उपसर्ग या प्रत्यय का प्रयोग होना चाहिये.

2–**व्युत्पादक प्रत्यय:**

धातु के पश्चात लगकर व्याकरणिक कोटि में परिवर्तन करने वाले प्रत्यय व्युत्पादक प्रत्यय कहलाते है,विद्वानों ने इसे कृदंत भी कहा है.कृदंत दो शब्दों से मिलकर बना है–कृत+अंत अर्थात कृदंत ऐसे शब्द हैं जिनके अंत में कृत प्रत्यय हो.

कृत प्रत्यय उन प्रत्ययों को कहा जाता है जो धातु में जोडे जाते है.हिन्दी में मुख्य कृदंत निम्न है-------

1अपूर्ण वर्तमान कालिक कृदंत-इसे धातु में'त' जोड्कर बनाया जाता है.प्रयोग करने के लिये लिंग /वचन के प्रत्यय - आ,ई,ए जोडे जाते है यथा--

चल–(धातु)----------त+आ=====चलता

----------त+ई=======चलती

पढ(धातु)---------- ----त+आ====पढता

----------त+ई=====पढती

----------ऐ======पढते

2पूर्ण कृदंत:यह भूतकालिक होता है.इसके लिये धातु में कुछ न जोड्कर लिंग /वचन के प्रत्यय लगाये जाते है----

(!) चल----आ======चला

(!!)पढ-----ई=======पढी

3क्रियार्थकसंज्ञा–इसमें धातु में 'न' जोड्कर लिंग /वचन के प्रत्यय जोडे जाते है---

चल----न----आ====चलना

हंस----न-----आ====हंसना

4पूर्वकालिक: इसके लिये धातु में कर या शून्य जोडा जाता है--

जा----कर=====जाकर

खा---कर=====खाकर

कुछ प्रत्यय इस प्रकार है-----

संस्कृत======विद+अना-------- वेदना

शिक्षा+अक------शिक्षक

हिन्दी======मिल+आप-----मिलाप

बेल+ना------बेलना

मध्यसर्ग का प्रयोग प्रेरणार्थक क्रिया के निर्माण के लिये किया जाता है.

वाना------करवाना

------- चलवाना

आना-----हंसाना

----रुलाना

समास:

वासुदेव नन्दन प्रसाद ने राजा भोज के दरबार की कथा का उल्लेख करते हुए एक श्लोक का उल्लेख किया है--

द्व्न्द्वो द्विगुरपि चाहं मदगेहे नित्यमव्ययी भाव:

तत्पुरुष कर्मधारय येनाअहं स्याम बहुब्रीहि:

इसमें द्वन्द्व ,द्विगु,अव्ययीभाव,महामान्य,कर्म,धारय,बहुब्रीहि समास का उल्लेख किया गया है

दो या दो से अधिक शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्यय का लोप होने पर उनसे जो स्वतंत्र शब्द बनता है,वह सामासिक शब्द कहलाता है.

*इसमें कम से कम दो पदों का योग होता है

*इसमें दो या अधिक पद एक हो जाते हैं

*इसमें समस्त होने वाले पदों की विभक्ति का लोप होता है.

*समस्त पदों के बीच सन्धि की स्थिति होने पर सन्धि अवश्य होती है.

उदाहरण

देश के लिये भक्ति---देशभक्ति

गृह में प्रवेश-------गृहप्रवेश

दिवा(दिन को)+कर(करने वाला)–दिवाकर

युद्ध में स्थिर----युधिष्ठिर

घृत में मिश्रित अन्न---घृतान

डा.भोलानाथ तिवारी ने शब्द विज्ञान पर करते हुए शब्द निर्माण हेतु दो प्रमुख स्रोत माने है-------

निर्माण---1दो शब्दों के मेल से

अक्ल+मंद =अक्लमन्द(उर्दू)

अर्जी+नवीस=अर्जीनवीस(उर्दू)

दल(संस्कृत)+बन्दी(फारसी)=दलबन्दी

देश(संस्कृत)+निकाला(हिन्दी)=देशनिकाला

2---------व्यक्तिवाचक संज्ञा के आधार पर

(क)व्यक्ति के नाम पर–लक्ष्मी(गृहलक्ष्मी)

-- (धनलक्ष्मी)

(ख) स्थान के आधार पर

चीन------ चीनी

मिस्र--- मिस्री

3. ध्वनियों के आधार पर ----- तड-तड

4.दृश्य के आधार पर ----- चम-चम

5. दूसरे शब्दों के आधार पर

शहर-शहराती (देहाती के आधार पर)

बारात-बाराती(इसी से घराती जैसे नए शब्द बने)

6.संक्षेप -- भा.ज.पा.

ब.स.पा.

लो.ज.पा.

7. व्याकरण के नियमों के आधार पर (परसर्ग,उपसर्ग के माध्यम से)

8. अनुवाद

9. स्वतंत्र रूप से निर्मित शब्द

10. उधार - शब्द निर्माण हेतु दूसरी भाषाओं से ही नहीं अपने प्राचीन साहित्य अथवा ग्रामीण बोलियों से भी शब्द उधार लिए जा सकते हैं.

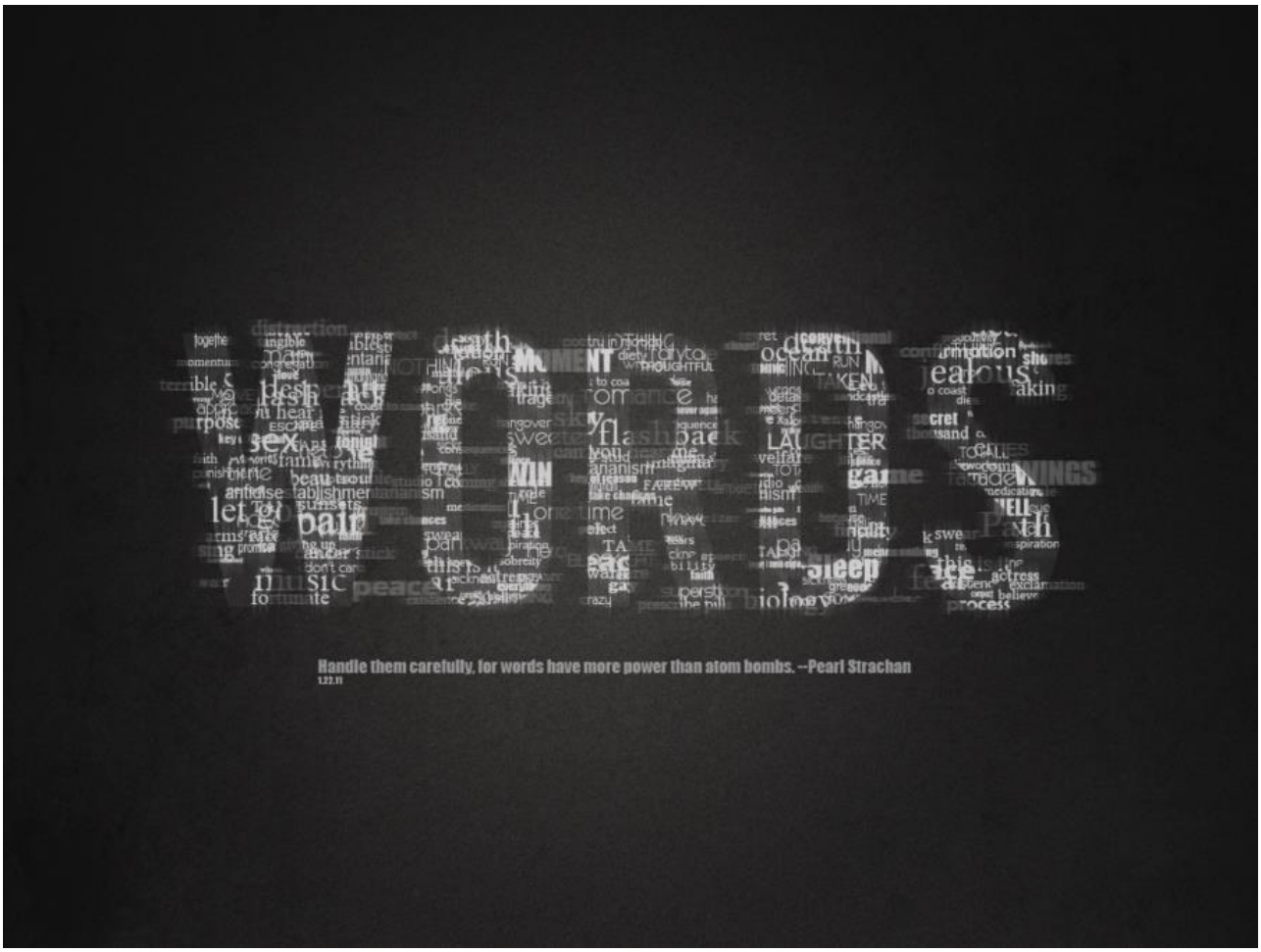

अभी हमने लेखन के स्तर पर शब्दों के निर्माण की भारतीय दृष्टि के संदर्भ में चर्चा की.पश्चिमी विचारकों में NIDA ने morphology नामक पुस्तक में व जॉर्ज यूल ने अपनी पुस्तक The study of language में भी शब्द निर्माण की प्रक्रिया पर विचार किया है। जॉर्ज यूल की संकल्पना के अनुसार 10 प्रकार से नए शब्दों का निर्माण संभव है-

1. Coinage: इसे नवनिर्माण भी कहा गया है। नवनिर्माण सरल तो नहीं है परन्तु कई बार विभिन्न

कंपनियों, ब्रांड के लिए प्रयुक्त होने वाले नाम भी आगे चलकर वस्तुओं के प्रतिरूप बन जाते हैं। यह प्रक्रिया भी नए शब्दों को भाषा में शामिल करने का महत्वपूर्ण तरीका है यथा- एक सामान्य व्यक्ति भी 'सरदर्द' के लिए Saridon माँगता है, घी के लिए 'डालडा' का इस्तेमाल करता है। फोटोग्राफी कराने के लिए Xerox शब्द का प्रयोग करता है और यदि इसमें नए प्रयोगों को जोड़ दिया जाए तो Rail Neer या Kinely का भी प्रयोग प्रचलित हो रहा है जैसे- टूथपेस्ट colgate बन गया।

2. Borrowing: इसका अर्थ हुआ- अन्य भाषाओं से शब्दों को ग्रहण करना। अंग्रेजी ने, हिन्दी ने व विश्व की समस्त भाषाओं ने अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण किए हैं यथा- अंग्रेजी ने-

एल्कोहल (अरबी) पियानो (फारसी) जेब्रा (चेक) से ग्रहण किए तो हिन्दी ने मरद (फारसी) जहर (फारसी) आतपीन (पुर्तगाली) अर्दली (अंग्रेजी) अस्तबल (अंग्रेजी) आलमारी (पुर्तगाली) से ग्रहण किए हैं।

3. Compaunding: अर्थात् जोड़ना। दो अलग-अलग शब्दों को जोड़कर एक नए शब्द का निर्माण। जॉर्ज यूल ने स्वयं अंग्रेजी भाषा के लिए उदाहरण दिए हैं यथा-

बुक केस, फिंगरप्रिंट, टेक्सट बुक इसी तरह से अन्य शब्दों में फिंगर चिप्स, फिंगर बाउल, टिश्यू पेपर, लंच बॉक्स, भी अंग्रेजी के उदाहरण हैं। हिन्दी में तो स्थानों के नामकरण भी इस आधार पर किए गए हैं- रानी खेत, नैनीताल, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़ आदि।

4. Acronyms: किसी शब्द का पूर्ण संक्षिप्तिकरण। यद्यपि clipping में भी इसका प्रयोग होता है पर दोनों में मूल अंतर है कि Acronyms में केवल शब्द के प्रथम मूल अक्षर पर ही बल दिया जाता है यथा-
Video compact disk- (VCD) Air Conditioner (A.C.) आदि।

5. Blending: इसके अंतर्गत भी यद्यपि दो शब्दों को जोड़कर नया शब्द बनाया जाता है पर Compounding से इसका मूल अंतर यह है कि इसमें प्रथम शब्द का आरम्भ व दूसरे शब्द का अंत लेकर नए शब्द बनाए जाते हैं। यूल द्वारा दिए गए उदाहरणों में-
ब्रंच (ब्रेकफास्ट + लंच) टेलीकास्ट (टेलीविजन + ब्रॉडकास्ट) इन्फोटेन्मेण्ट (इन्फोरमेशन + इंटरटेन्मेंट)

हिन्दी में भी अब इन शब्दों का प्रयोग बहुप्रचलित हो गया है।

6. Clipping: इसका अर्थ है कि जिस शब्द में एक से अधिक अक्षर हों उसे छोटा करके प्रयोग करना। अधिकांशतः इसका प्रयोग आपसी, निजी या अनौपचारिक बातचीत में किया जाता है जैसे 'समीर' नाम के व्यक्ति के लिए 'सैम' का प्रयोग, कमला नगर (के-नेग्स) कनॉट प्लेस (सी.पी) इन्द्रप्रस्थ (आई.पी.) एडवरटाइजमेंट (एड) ऑडिटोरियम के लिए (ऑडी) का प्रयोग।

7. Backformation: इसके अंतर्गत भी शब्द को छोटा करके (संक्षेपीकरण) प्रयोग करते हैं परन्तु मूल अंतर है कि अधिकांशतः इसका उपयोग शब्द के रूप में परिवर्तन के लिए किया जाता है यथा-
संज्ञा से क्रिया का निर्माण या क्रिया से संज्ञा का निर्माण
उदाहरण
मार- मारना चल-चलना option–opt
Donation-- donate
सवार- सवारी एक्ट (एक्टिंग) (एक्टर)
एंकर- एंकरिंग

8. Conversion: इसका अर्थ है कि बिना शब्द के किसी रूप में परिवर्तन किए उसका प्रयोग किसी अन्य रूप के लिए करना। यथा संज्ञा शब्द का प्रयोग क्रिया के लिए। अंग्रेजी में यूल द्वारा दिए गए उदाहरण-

Butter He buttered the toast

Paper He had papered his bedroom walls.

नवम् व दशम वर्ग में वह उपसर्ग, मध्यसर्ग व प्रत्यय की चर्चा करता है। इसकी व्याख्या हिन्दी के संदर्भ में की जा चुकी है। अंग्रेजी के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

Prefix 1. Im + pulse = Impulse

2. In + Centive = incentive

3. Un + want = unwanted

Infix 1- Spoon = spoooon

2. Absolutely absoooluteely

Suffix 1-Respectful .2 Loneliness 3. Happiness

विवेचन :

शब्द निर्माण की प्रक्रिया को जानते और समझते हुए हमने लेखन के स्तर पर शब्दों के विविध रूपों को देखा । उच्चारण के स्तर पर यद्यपि शब्दों का निर्माण तो नहीं होता पर दबाव देकर बोलने से शब्द के प्रारूप, विन्यास व उच्चारण में अंतर आ जाता है। अंग्रेजी में इसका विशेष महत्व है। अंग्रेजी में दबाव (stress) के कारण ही कई वर्णों का उच्चारण या तो शान्त हो जाता है या तेज हो जाता है। उदाहरण के लिए-

Wednesday 'वेडनसडे' पढ़ा जाए या 'वेनसडे' यह समझने के लिए Stress को जानना आवश्यक हो जाता है। अंग्रेजी में अधिकांशत एक अक्षर (syllable) पर अधिक दबाव दिया जाता है यथा-

Lan'guage deve'lopment

Suc'ceeds

Spanish में भी Stress level अंग्रेजी के समान ही है यथा-

Accio'n (Action)

Tele'pone (Telephone)

Spanish में दबाव के लिए दो प्रकार के नियम बनाए गए हैं यथा-

1. यदि कोई शब्द किसी स्वर अथवा N या S से समाप्त होता है तो अंतिम अक्षर से पूर्व पर दबाव होगा-

i) Amigo hablan

(They Talk)

ii) Animales

2. अन्य सभी शब्दों में अंतिम अक्षर पर अधिक दबाव होगा-

Hotel similar espanol

निष्कर्ष :

शब्द निर्माण निरंतर की जाने वाली शोध का नतीजा है जिसके तहत हमने जाना-

1. शब्द को मात्र शब्द कहकर परिभाषित किया जाना संभव नहीं शब्द के लिए भाषाविज्ञान में संकेत है-पद

2. शब्द (पद) विभिन्न प्रकार के हैं यथा- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया व क्रिया विशेषण। इनमें से कुछ निरन्तर परिवर्तनशील हैं जबकि कुछ परिवर्तनशील नहीं होते।

3. वाक्य के अंतर्गत पद का ही प्रयोग होता है। भले ही वह शून्य संबंध तत्व से जुड़ा हो।

4. शब्द रूढ़ भी होते हैं व यौगिक भी। रूढ़ शब्द अपने अर्थ में स्थिर हो चुके होते हैं जबकि यौगिक द्वारा नए शब्द भी बन जाते हैं।

5. शब्द निर्मित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व है- धातु। धातु (Root) ही निरन्तर नए अर्थ का विस्तार करती है।

6. धातु के अतिरिक्त उपसर्ग, प्रत्यय, समास, संधि भी शब्दों का निर्माण करते हैं।

7. समास समस्त पद है जो विभक्तियों को हटाकर शब्द को सुगठित करते हैं।

8. सन्धि स्वर, व्यंजन, विसर्ग तीनों स्तरों पर कार्य करती है।

इस प्रकार हमने सीखा कि-

1. शब्द क्या है तथा शब्द व पद का संबंध क्या/किस प्रकार होता है।

2. प्रत्येक भाषा के पास शब्दों का भण्डार होता है व वह निरंतर इस भण्डार के संवर्द्धन के लिए कार्य करती

3 विभिन्न समितियों ने पारिभाषिक शब्दों की निर्मिति के अनेक उदाहरण दिए

4 विकारी एवं अविकारी शब्दों का अभिप्राय।

5 शब्दों के वर्ग व विभिन्न वर्गों का सहसंबंध

6 धातु के मूल व यौगिक रूपों का स्वरूप।

प्रश्नोत्तर : सामान्य प्रश्न

1. शब्द व पद में अंतर बताइए।
2. किसी भी भाषा में शब्द निर्माण की आवश्यकता क्यों होती है, उदाहरण सहित उत्तर दें।
3. शब्द का निर्माण कैसे होता है? भाषा विज्ञान में शब्द से छोटी कौन सी इकाई मानी जाती है और क्यों?
4. शुद्धतावादी विचारधारा के समर्थक कौन थे? उनकी मान्यता के बारे में विचार करें।
5. समंवयवादी विचारधारा को समझाइए?
6. शब्दों का वर्गीकरण कितने आधारों पर किया जा सकता है?
7. विकारी एवं अविकारी शब्दों का अर्थ बताइए।
8. रूढ़ शब्द कौन से होते हैं? उन्हें रूढ़ क्यों कहा जाता है?
9. योगरूढ़ शब्दों से क्या अभिप्राय है?
10. संज्ञा की परिभाषा एवं उनके प्रकार लिखिए।
11. क्रिया की परिभाषा बनाते हुए सकर्मक व अकर्मक क्रिया में भेद समझाइए।
12. मूल धातु से क्या अभिप्राय है?
13. शब्द निर्माण के लिए भारतीय दृष्टि में किन-किन व्याकरणिक कोटियों को शामिल किया गया है?
14. उपसर्ग व प्रत्यय में अंतर बताइए।
15. समास का शब्द निर्माण के संदर्भ में महत्व समझाइए।
16. संधि से क्या अभिप्राय है? स्वर संधि की पहचान किस प्रकार की जाती है।
17. उच्चारण के स्तर पर दबाव के महत्व को समझाइए।

प्रायोगिक प्रश्न : (अभ्यास प्रश्न)

1. निम्न शब्दों से अन्य विकारी शब्द बनाएँ-

सज्जन, महाजन, नौकर, महान

2. निम्न अविकारी शब्दों का प्रयोग वाक्य में करें-

धीरे, , तब, ठीक

3. निम्न योगरूढ़ शब्दों का वाक्य में प्रयोग करते हुए उनका अर्थ बताइए-

नीरज, कमल, पंकज, दरबान

4. निम्न वाक्यों में ' ' को भाववाचक संज्ञा में बदलिए-

क. वह व्यक्ति अच्छा है।

ख. वह व्यक्ति सज्जन है।

ग. उसका व्यवहार नम्र है।

घ. वह व्यक्ति विशेष है।

5 निम्न संज्ञा शब्दों से सर्वनाम बनाइए-

लड़की घर जाती है

सज्जन **व्यक्ति** को बुलाओ।

बेटे को घर जाना है।

सीता और **प्रभा** पढ़ती है।

6. निम्न धातुओं से क्रिया का निर्माण करें-

पढ़, गा, खा, गिर, हँस

7. विशेषण छाँटिए-

क. वह तेज लडकी है.

ख. वह बहुत सन्दर है।

ग. लड़की काम में दक्ष है।

घ. शोभा अच्छी लड़की है।

8. निम्न क्रियाओं को प्रेरणार्थक क्रिया बनाइए-

1. वह हँसता है।

2. वह चलता है।

3. उससे दूध गिर गया।

9. निम्न उपसर्गों से पाँच-पाँच शब्द बुनाइए-

कु, वि, अप, सु, नि

10. निम्न समस्त पदों का विग्रह करें-

1. राजमहल 2. गणेश 3. गजानन 4 पीताम्बर

संवाद के बिन्दु :

आइए बातचीत करें-

1. क्या आपको लगता है कि हिन्दी के पास जितने शब्द हैं उनसे हमारी समस्त आवश्यकताएँ पूर्ण हो जाती हैं? यदि नहीं तो क्या निरन्तर निर्माण की प्रक्रिया को चलना चाहिए?

2. आज के माहौल में जब समस्त भाषाएँ एक दूसरे के संपर्क में आ रही हैं, आप क्या सोचते हैं कि हिन्दी

का इससे लाभ होगा?

3. शब्द निर्माण की प्रक्रिया अत्यंत रुचिकर विषय है। क्या आप ऐसा सोचते हैं? यदि हाँ तो कुछ शब्द बनाइए और भेज दीजिए हमारे पास।

4. शब्द निर्माण की प्रक्रिया में अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। आप सोचिए और बताइए ऐसे कौन से शब्द है। जो हिन्दी में अन्य भाषाओं से लिए हैं?

5. हिन्दी में उपसर्ग व प्रत्यय के तमाम उदाहरण हैं। कुछ उदाहरण मध्यवर्ग के भी ढूँढिए।

रचनात्मक योगदान :

शब्द निर्माण की प्रक्रिया के बारे में आपने जाना। शब्द जादू की भाँति कार्य करते हैं और मन-मस्तिष्क पर छा जाते हैं। शब्दों से जुड़ी दो महवपूर्ण पुस्तकें हैं-

"THE STUDY OF LANGUAGE" G. YULE CAMBRIDGE UNIVERSITY ,

K V.H. COLLINS RIGHT WORD WRONG WORD LONGMAN

पुस्तकें ज्ञान व मार्ग खोलती हैं। भाषा के अध्ययन का आरंभ शब्द से ही होता है। शब्दों का सही स्थान पर सही प्रयोग ही भाषा के निरन्तर विकास में सहायक होता है। आप शब्दों के और अधिक गंभीर अध्ययन के लिए उपरोक्त पुस्तकों का अध्ययन कर सकते हैं। आप क्या हमें कुछ और बेहतर पुस्तकों का नाम सुझा पाएँगे? कुछ अध्ययन सामग्री के बारे में बता पाएँगे?

संदर्भ ग्रंथ :

1 .Morphology: NIDA

2. The Study of Language: George Yule

3. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ. वासुदेव नन्दन प्रसाद।

4. शब्दानुशासन : किशोरीदास वाजपेयी

5. The Science of words: G. Miller

क्या इस यूनिट को पढ़कर अपने भीतर छिपे शब्दों को वाणी देने का मन करता है आपका? क्या आप सोचते हैं कि जिस शब्द का प्रयोग आप कर रहे हैं वे शब्द कितना व्यापक अर्थ रखते हैं? शब्दों की इस दुनिया में प्रवेश करिए और खंगालिए अपने भीतर छिपे शब्दों को। निर्माण न करें तो कुछ लिखिए ही। अपने अन्दर छिपे शब्दों की ताकत को पहचानिए और हमसे बातचीत कीजिए। स्वागत है आपका इस नई खूबसूरत सी दुनिया में।

Sub Unit 2 : पदबंध

विषय :

हमने प्रथम पाठ के अंतर्गत शब्द के स्वरूप व उसके निर्माण की प्रक्रिया को समझा। शब्द भाषा की महत्वपूर्ण इकाई है परन्तु शब्द का वास्तविक महत्व वाक्य के अंतर्गत ही होता है। हम यह भी जान चुके हैं कि शब्द का वाक्य में प्रयोग 'पद' के रूप में होता है। 'पद' वाक्य निर्माण में सर्वाधिक सहायक तत्व है। इस इकाई में हम वाक्य का अर्थ, स्वरूप, वाक्य के अंतर्गत प्रयुक्त पदों का स्वरूप व उनके बंधाव को समझेंगे।

विषय क्षेत्र/सार :

पदबंध के स्वरूप को समझने के लिए सर्वप्रथम वाक्य की अवधारणा को जानना आवश्यक है।

वाक्य किसे कहा जाए?

जिस प्रकार सार्थक ध्वनियों का समूह शब्द का निर्माण करता है, उसी प्रकार सार्थक शब्दों का समूह वाक्य का निर्माण करता है। विभिन्न प्रकार के शब्द एक साथ- कर्ता, कर्म, क्रिया के रूप में आकर वाक्य का निर्माण करते हैं।

प्रत्येक भाषा के अंतर्गत कर्ता, कर्म, क्रिया संबंधी नियम निश्चित किए गए हैं। इन्हीं नियमों के आधार पर भाषा के अंतर्गत वाक्य का निर्माण होता है यथा-

हिन्दी : रवि खाना खाता है- कर्ता, कर्म, क्रिया (SOV)

अंग्रेजी Ravi eats food - कर्ता, क्रिया, कर्म (svo)

एक भाषा कर्ता, कर्म, क्रिया को अपनाती है तो दूसरी कर्ता, क्रिया, कर्म को। इस प्रयोग की सार्थकता और पदबंध के रूप में इसका वैशिष्टय़ जानने से पूर्व इन शब्दों की बारीकियों को समझना आवश्यक है।

विषय-प्रवेश :

कर्ता, कर्म, क्रिया तीनों ही पदबंध का स्परूप ग्रहण करते हैं। मुख्यतया कर्ता व क्रिया का विस्तार पदबंध के रूप में होता है। इन शब्दों की अवधारणा इस प्रकार है-

कर्ता : अंग्रेजी में कर्ता के लिए Subject शब्द का प्रयोग किया जाता है। किसी कार्य के करने वाले को कहा जाता है। संज्ञा, एवं सर्वनाम दोनों का प्रयोग कर्ता के रूप में होता है यथा-

(संज्ञा) **कमल** जाता है।

(सर्वनाम) **वह** जाता है।

(सर्वनाम) **वे दोनों** जाते हैं।

(सर्वनाम) **हम** जाते हैं।

कर्म : कर्ता के द्वारा किए जाने वाले कार्य को कर्म कहते हैं। कर्ता के संबंध में प्रश्न किए जाने पर जिस वस्तु का उल्लेख हो वही कर्म है।

कमल जाता है कहाँ- घर (कर्म)

वह आ रहा है कहाँ - वापस (कर्म)

वे दोनों जाएंगे (कब)- कल (कर्म)

क्रिया : जिससे किसी कार्य के होने का ज्ञान हो, उसे क्रिया कहते हैं। क्रिया की व्याख्या शब्द निर्माण के संदर्भ में की जा चुकी है।

क्रिया तीनों कालों में अलग-अलग रूपों में कार्य करती है। क्रिया के अंतर्गत काल और पक्ष की अवधारणा सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है।

वर्तमान काल :

सकारात्मक	नकारात्मक	प्रश्नवाचक
वह-है	वह- नहीं है	क्या वह- है?
		क्या वह नहीं- है?
मैं-हूँ	मैं नहीं-हूँ	क्या मैं- हूँ
		क्या मैं नहीं-हूँ

प्रश्नवाचक के अंतर्गत क्रिया का प्रयोग सकारात्मक अथवा नहीं जोड़कर नकारात्मक दोनों रूपों में किया जा सकता है।

भूतकाल

सकारात्मक	नकारात्मक	प्रश्नवाचक
वह-था	वह नहीं-था	क्या वह-था? क्या वह नहीं था?

भविष्य

सकारात्मक	नकारात्मक	प्रश्नवाचक
वह-बनेगा	वह नहीं-बनेगा	क्या वह- बनेगा?

काल की अवधारणा क्रिया के अंतर्गत दो रूपों में वयक्त होती है-

1. वर्तमान, भूत, भविष्य को स्पष्ट करने के लिए
2. पूर्णता, अपूर्णता, सामान्यता, संभावना दर्शाने के लिए

पूर्णता- उसने काम कर लिया।

अपूर्णता- वह काम कर रहा होगा।

सामान्य- यदि वह काम करता।

संभावना- शायद वह काम कर रहा होगा।

इन सभी पक्षों की पूर्णता यद्यपि वाक्य के अंतर्गत ही होती है परन्तु वाक्य के अंतर्गत आने वाले इन पदों के भी अपने-अपने समूह होते हैं। किसी पद के पूर्व आने वाले समूह उस पद के वैशिष्ट्य को वर्धित करते हैं अतः वह पदबंध कहलाते हैं।

विषय-प्रतिपादन :

पदबंध को जानने का आरंभ हम एक उदाहरण के माध्यम से करेंगे-

(कर्ता) राम आ रहा है।

दशरथ के पुत्र राम आ रहे हैं।

पदबंध :

दोनों वाक्य स्वयं में पूर्ण हैं व अर्थ सम्प्रेषण में सक्षम भी परन्तु प्रथम वाक्य में 'राम' एक सामान्य व्यक्ति मात्र है जिसके आने की सूचना उसके मित्र या निकट संबंधी के लिए महत्वपूर्ण हो सकती है अन्य व्यक्तियों के लिए नहीं। क्रिया का प्रयोग भी कर्ता के अनुसार ही है परन्तु (कर्ता) का वैशिष्ट्य दशरथ पुत्र, मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में होता है तो 'राम' एक विशिष्ट व्यक्तित्व बन जाते हैं व क्रिया के रूप में भी परिवर्तन आ जाता है। राम का वैशिष्ट्य पदबंध की सहायता से उद्घाटित हुआ अतः पदबंध को पहचानना व उसका वाक्य में प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

एक अन्य उदाहरण से हम यह देखने का प्रयास करेंगे कि वाक्य के अंतर्गत कर्ता, कर्म, क्रिया के अतिरिक्त किन पदों का प्रयोग होता है यथा-

एक	लड़का	रात भर		बैठकर		रोता रहा	और		गाता रहा।
	संज्ञा	संबंधसूचक		क्रिया वि.		क्रिया	समुच्चय बोधक		क्रिया

इस वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, क्रिया विशेषण के अतिरिक्त संबंधसूचक शब्दों व समुच्चय बोधक शब्दों का प्रयोग किया गया है। पदबंध को जानने से पूर्व इन शब्दों के स्वरूप को समझना उपयोगी है।

संबंधसूचक शब्द :

ये अविकारी शब्द हैं जिनमें परिवर्तन नहीं होता। संज्ञा के पश्चात आकर ये संज्ञा का संबंध दूसरे शब्दों से जोड़ते हैं यथा-

का, की, के, भर, के बिना, पूर्वक आदि का प्रयोग

हर कोई सुख से (पूर्वक) नहीं रह सकता।

पैसे के बिना आज इंसान को कोई नहीं पूछता।

समुच्चय बोधक शब्द :

ये भी अविकारी शब्द हैं। इनका प्रयोग दो वाक्यों में संबंध जोड़ने के लिए किया जाता है। यथा-

1. वह आया 2. यह गया

वह आया और यह गया।

1. तुम जा रहे हो 2. काम हो भी पाएगा या नहीं

--तुम जा तो रहे हो परन्तु काम हो भी पाएगा।

--या तो तुम रहो या वह।

इन सभी रूपों को समझने के पश्चात् यदि **वाक्य के भेद करें तो वाक्य के दो भेद माने जा सकते हैं-**

1. उद्देश्य	**2. विधेय**
राम	खाता है
अर्थात जो कार्य का नियोक्ता है।	कार्य का स्वरूप, उद्देश्य व वैशिष्ट्य

उद्देश्य के आधार पर पदबंध :

उद्देश्य का विस्तार संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, समानाधिकरण शब्द के रूप में किया जा सकता है।

1दशरथ के पुत्र राम

2मैं रामलाल यह कहना चाहता हूँ

3उसका बेटा कमल बहुत तेज है।

4काले रंग का घोड़ा अच्छी प्रजाति में मिलता है।

5वह सज्जन व्यक्ति सबकी सहायता करते हैं।

विधेय के रूप में पदबंध :

1वह बहुत तेजी से बोलता है।

2उसका पुत्र कहीं दौड़ता हुआ जा रहा था।

3धीरे धीरे बोलो

4मेरा कम्प्यूटर शीघ्रता से ऑन नहीं होता।

पदबंध को समझने के लिए निम्न रूपों में उसका अध्ययन किया जाता है-

1. संज्ञा पदबंध :

संज्ञा पदबंध एवं सर्वनाम पदबंध का प्रयोग एक ही साथ समझा जा सकता है। इन पदबंधों का प्रयोग कर्ता, कर्म अथवा पूरक के रूप में किया जा सकता है।

(क) कर्ता के रूप में-

संज्ञा- कमल आया
विस्तार- उसका पुत्र कमल
उसका होनहार पुत्र कमल
उसका होनहार, कुशाग्र पुत्र कमल
उसका होनहार, कुशाग्र, चुस्त, फुर्तीला पुत्र कमल
यहा पदबंध के रूप में उपर्युक्त रूपों में कमल की विभिन्न विशेषताएँ प्रकट हुईं जो शारीरिक भी हो सकती हैं व मानसिक भी।
इसी प्रकार
सर्वनाम- वह आया
विस्तार- कॉलेज से पढ़कर वह
कॉलेज से पढ़-लिखकर वह
कॉलेज से पढ़-लिखकर और नौकरी के लिए साक्षात्कार देकर वह
'वह' से पूर्व उसकी विभिन्न विशेषताओं को पदबंध के माध्यम से सूचित किया गया।
कर्ता के रूप में संज्ञा का प्रयोग निम्न रूपों में होता है-
संज्ञा

भावार्थक संज्ञा	क्रियार्थक संज्ञा
(Infinitive)	(Gerund)

अंग्रेजी में भावार्थक संज्ञा का प्रयोग निम्न प्रकार से माना गया है-

1. To + verb का प्रयोग यथा-
To decide
To fulfill
To try
To play
It is really important to decide our (aim) in life.
भावार्थक संज्ञा संज्ञा
निश्चय करना महत्वपूर्ण कार्य है।
It is our duty to fulfill the work in time समय पर कार्य पूर्ण करना जरूरी है।
We are going to play
हम खेलने जा रहे हैं।
2 That + Sub + Verb
That + Ram/Rahul/Ravi + Verb
I think that Ram would forget to come
मुझे लगता है कि.....
उसे महसूस होता है कि

राम को विश्वास है कि

3 Continuous Infinitive

to be + verb (ing)

to be+ meeting

वर्तमान रहा है/रही है के रूप में प्रयोग

मैं उससे मिलना ही चाह रही थी

वो मुझसे बात करना चाह रहा था

हिन्दी में मुख्य रूप में 'ना' का प्रयोग क्रिया के साथ करके संज्ञा के रूप में उसे प्रयुक्त किया जाता है यथा-

चलना सेहत के लिए अच्छा है।

तैराकी करना सबसे सरल कार्य है।

प्रयत्न करना महत्वपूर्ण है सफलता नहीं।

2. क्रियार्थक संज्ञा

अंग्रेजी में क्रियार्थक संज्ञा के लिए क्रिया के साथ ing का प्रयोग होता है जैसे-

No Smoking धूम्रपान निषेध

Forgiving someone in divine

क्षमा दैवीय गुण है।

कर्ता का विस्तार :

तेज तेज चलना **सभी के लिए** फायदेमंद है।

लगातार प्रयत्न करना **सफलता** के लिए आवश्यक है।

सही तरीके से **योजना बनाना** कार्य को सफल बनाता है।

कर्म के रूप में संज्ञा का प्रयोग :

कर्म के रूप में संज्ञा का प्रयोग विधेय के अंतर्गत किया जाता है यथा-

अंग्रेजी के अंतर्गत

She does her work -	संज्ञा
I know she is a good dancer	सर्वनाम
I know they will come -	सर्वनाम
We want to decide about -	भावार्थक संज्ञा
We want to try again-	भावार्थक संज्ञा
He likes smoking -	क्रियार्थक संज्ञा
He likes planning for future-	क्रियार्थक

वह अपना काम करती है।

वह बहुत खूबसूरती से नृत्य करती है।

मुझे लगता है वे आएंगे।- सर्वनाम

उसे धूम्रपान पसंद है

हमें योजनाबद्ध कार्य पसंद है।

कर्म का विस्तार :

वह अपना काम बहुत खूबसूरती से करती हैं

कर्म विस्तार

वह निश्चय करना चाहता है।

वह दृढ़ निश्चय करना चाहता है।

उसे धूम्रपान पसंद है।

उसे हर क्षण धूम्रपान पसंद है।

उसे हर क्षण तो नहीं कभी-कभी शौकिया धूम्रपान पसंद है।

पूरक :

यद्यपि कर्ता और क्रिया स्वयं वाक्य का निर्माण करने में सक्षम होते हैं परन्तु कई बार इन दोनों से भी वाक्य की पूर्ति नहीं होती। ऐसे में पूरक (complement) की भी आवश्यकता होती है। सकर्मक क्रियाओं में यद्यपि कर्म की उपस्थिति के कारण वाक्य पूर्ण होता है परन्तु कई बार सकर्मक क्रिया के अधूरेपन को पूर्ण करने के लिए भी पूरक की आवश्यकता होती है। पूरक का प्रयोग कर्ता एवं कर्म दोनों के रूप में किया जाता है। अकर्मक क्रियाओं में पूरक का प्रयोग कर्तापूरक के रूप में तथा सकर्मक क्रियाओं में कर्मपूरक के रूप में प्रयुक्त होता है।

अकर्मक

1. उसका सामान कमरे में है (कहाँ)

(बेड पर/ अलमारी में)

2. उसकी बेटी एअर होस्टेस/सिस्टर है (क्या)
3. उसका घर किनारे पर है (कहाँ)
4. वह ठीक है (कैसा)
5. वे कॉलेज में है (कहाँ)
6. वे मुझसे मिलने आए (क्यों)

सकर्मक

1. 'उन्होंने इसे नियुक्त किया' वाक्य पूर्ण है पर इसके पश्चात भी कुछ अधूरापन प्रतीत होता है जिसकी पूर्ति 'पूरक' द्वारा की जानी है यथा उन्होंने उसे एक प्रोजेक्ट कार्य हेतु नियुक्त किया।

इसी प्रकार :

- उसने उसे प्रवक्ता के पद पर नियुक्त किया।
- उन्होंने हमें एक आइसक्रीम खिलाई।
- वे आराम करने के लिए घर चले गए
- वे अमरीका एक टूर के सिलसिले में गए।
- वे अधिकांषतः दूष स्वास्थ्य वर्धन के लिए पीते हैं।

पूरक का प्रयोग एवं विस्तारः-

1. वे यहाँ आए

- वे, जो कल आपसे मिले थे, यहाँ आए
- वे, जो पहले आपके घर आए थे, यहाँ आए

2. वे यहाँ मुझसे मिलने आए।

- मुझसे मिलने और बात करने
- मुझसे मिलने, कार्य करने और बात करने

क्रिया पदबंध

क्रिया का विभाजन दो रूपों में किया गया है-

सामान्य क्रिया सहायक क्रिया

सामान्य क्रियाएँ सभी भाषाओं में अनेकानेक हैं यथा- पढ़, खा, जा, हँस, पी, रो,

(अंतिम सूची नहीं हो सकती)।

प्रयोग

	सकारात्मक	नकारात्मक
वर्तमान	सुनना बोलने से अधिक जरूरी	ठीक से न सुनने वाला ठीक से बोल भी
भावार्थक संज्ञा	माना गया है।	नहीं सकता
रहा है/रही है	शायद वह जीवन में महत्वपूर्ण	शायद वह जीवन में सही निश्चय नहीं कर
	निश्चय कर रहा है।	पा रहा है।
चुका/चुकी है	वह दृढ़ निश्चय कर चुका है।	वह दृढ़ निश्चय नहीं कर चुका है।
वर्तमान क्रियार्थक धूम्रपान सेहत के लिए खतरनाक है।		धूम्रपान करने से सेहत ठीक नहीं रहती
संज्ञा रूप		
	तैरना व्यक्ति का शौक हो सकता है।	तैरना सरल कार्य नहीं है।

क्रिया के अंतर्गत काल की अवधारणा का विशेष महत्व है। काल के अंतर्गत क्रिया का स्वरूप निम्न रूप से समझा जा सकता है-

वर्तमान

सामान्य- वह खाता है।

वहा खा रहा है।

वह खा चुका है।

वह दो घण्टे से खा रहा है।

भूतकाल

उसने खाया

वह खा रहा था।

उसने खा लिया

वह दो घण्टे से खा रहा था।

भविष्य

वह खाएगा

वह खा रहा होगा

उसने खा लिया होगा

वह दो घण्टे से खा रहा हो।

वर्तमान (संभाव्य) - शायद वह काम करे।

शायद वह काम कर रहा होगा।

सहायक क्रियाएँ :

			वर्तमान			भूत		भविष्य	
Be		होना		है			था		होगा
Have		चुका		चुका है			चुका था		चुका होगा
Do		करना		किया है			किया था		किया होगा
Can		सकना		सकता			सका		सकेगा
May		सकना		सकता			सका		सकेगा
Must		चाहिए		चाहिए			चाहिए था		चाहिए होगा
Need		-		-			-		-
Will		-		-					गा
Shall		गा		-			-		गा
Should		चाहिए		चाहिए			चाहिए		-
Ought		चाहिए		चाहिए			चाहिए		

-

हिन्दी में क्रियाओं के अंतर्गत तीन अन्य प्रकार की भी पाई जाती हैं-

क) रंजक क्रियाएँ

ख) सक क्रियाएँ ¼Models½

ग) वाच्य

(क) रंजक क्रियाएँ : हिन्दी में लेना, देना, करना, आदि रंजक क्रियाएँ हैं जिनका प्रयोग सामान्य क्रियाओं के साथ ही होता है-

उसे यह काम करना चाहिए।

उसे यह काम कर लेना चाहिए।

(ख) सक क्रियाएँ ¼Models½ : अंग्रेजी में निम्न शब्दों का प्रयोग Models के-

(संभावना) **May** = You may go to school.
(भूतकाल) **Might** = She might come late

(सामर्थ्य) **Can** = She can handle any critical situation
(भूतकाल) **Could** = He could reach there in time

(निश्चय) **Will** = He will do it.
(भूतकाल) **Would** = We would do it.
(निश्चय कर्तव्य) **Shall** = One shall perform his duty.
(भूतकाल) **Should** =One should do it in time.

- सहायक क्रियाओं में कर्ता के अनुरूप परिवर्तन होता है परन्तु Modals में परिवर्तन कर्ता के अनुसार नहीं होता।

He can We can

I can She can

हिन्दी में ता है/ती हैं के प्रयोग में अंतर आ जाता है।

- सहायक क्रियाओं की भाँति इनका प्रयोग भी क्रिया के साथ ही होता है। स्वतंत्र रूप में अर्थसिद्धि में ये सहायक नहीं होती-

Can go Should do it

हिन्दी में सक क्रियाओं का प्रयोग

वर्तमान	सकता	चुका	चाहिए
भूतकाल	सका	चुकेगा	चाहिए था
भविष्य	सकेगा	चुका होगा	चाहिए होगा

वाच्य प्रयोग

वाच्य का प्रयोग दो रूपों में किया जाता है-

(क) कर्तृवाच्य- जहाँ कर्ता की प्रधानता हो।

(ख) कर्मवाच्य- कर्म की प्रधानता के अनुसार बचने वाले वाक्य।

राम खिलौनों से खेलता है- कर्तृवाच्य

राम द्वारा खिलौनों से खेला जाता है- कर्मवाच्य

विभिन्न कालों के अनुसार वाच्य संबंधी नियम इस प्रकार हैं-

काल		कर्तृ		कर्म			
वर्तमान		क) मैं अपना काम करता हूँ।		मेरे द्वारा काम किया जाता है।			
भूतकाल	ख) मैंने अपना			काम मेरे द्वारा किया			

	काम किया।			गया।			
भविष्य		ग) मैं अपना काम करूँगा।		मेरे द्वारा काम किया जाएगा।			
		इसी प्रकार					
		क) मैं अपना काम कर रहा हूँ		काम मेरे द्वारा किया जा रहा है।			
		ख) मैं अपना काम कर चुका हूँ		काम मेरे द्वारा किया जा चुका है।			

नियमानुसार :

- कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य के रूप में कर्ता के स्थान पर कर्म की प्रमुखता हो जाती है व कर्ता के पश्चात् 'द्वारा' का प्रयोग होता है।
- कर्ता के अनुसार क्रिया का स्वरूप बदल जाता है।

काम करता हूँ- किया जाता है।
खरीदता हूँ- खरीदा जाता है।
खाता हूँ- खाया जाता है।
क्रिया के स्वरूप को बदलने के लिए 'जाना है, गया' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य के अतिरिक्त भाववाच्य का भी प्रयोग होता है।
भाववाच्य का प्रयोग प्रायः शारीरिक अशक्तता, कमी के लिए किया जाता है-
मुझसे खाया जाता है।
क्रिया पदबंध का विस्तार-

- मैं जा रहा हूँ।

मैं कल ही जा रहा हूँ।
मैं कल सुबह जा रहा हूँ।
मैं जा रही हूँ

- उसने मुझे कहानी सुनाई।

उसने मुझे कहानी प्रेमपूर्वक सुनाई।
उसने मुझे कहानी प्रेमपूर्वक, हँसते, मुस्कुराते हुए सुनाई।
- वह जा सकता है।
वह निश्चित रूप से जा सकता है।
वह निश्चित रूप से कल ही जा सकता है।
विवेचन :

पदबंध का स्वरूप समझते हुए हमने संज्ञा, क्रिया के रूप में पदबंध को पहचाना। यहाँ सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि पदबंध में क्रम का अत्यधिक महत्व है। क्रमानुसार आने वाले शब्द ही पद का वैशिष्ट्य वर्धित करते हैं यथा-

संज्ञा पदबंध

राम का लड़का मेरे घर आया
विस्तार संज्ञा
इसका प्रयोग यदि
-लड़का का राम मेरे घर आया।
के रूप में किया जाए तो वह अत्यंत हास्यास्पद होगा तथा व्याकरणिक रूप में भी अशुद्ध होगा।
यथा एक अत्यंत प्रचलित वाक्य है।
--खरगोश को गाजर काटकर खिलाओ।

इस वाक्य में महत्व काटने का है। गाजर के पूर्व रखने पर वाक्य व्याकरणिक रूप से तो सही रहेगा परन्तु सामाजिक स्तर पर स्वीकार्य नहीं होगा।

कहा जा सकता है कि पदबंध का स्वरूप मात्र व्याकरणिक नियमों पर आधारित नहीं होता बल्कि सामाजिक नियम भी उसके स्वरूप को तय करते हैं यथा-

1कृष्ण मुरली बजा रहा है।

2दुष्ट दलन श्री द्वारकाधीश कृष्ण मुरली बजा रहे हैं।

क्रिया का रूप बदलने का मूल कारण सामाजिक स्वीकृति ही है। यदि मात्र व्याकरणिक स्तर पर पदबंध को संज्ञा से पूर्व रखा जाता तो क्रिया के स्वरूप में परिवर्तन नहीं आता।

निष्कर्ष :

पदबंध पर विचार करते हुए हमने जाना कि-
(क) वाक्य का अर्थ एवं उसका स्वरूप किस प्रकार का होता है।
(ख) कर्ता का स्वरूप व प्रयोग के नियम।
(ग) कर्म का कर्ता से संबंध एवं प्रयोग।
(घ) क्रिया के अंतर्गत काल एवं पक्ष का महत्व
(ङ) पदबंध का अर्थ, वैशिष्ट्य एवं स्वरूप
(च) संबंधसूचक शब्द व समुच्चय बोधक शब्द की पहचान।
(छ) उद्देश्य व विधेय का अर्थ व प्रयोग।
अतः हमने सीखा कि

(क) संज्ञा/सर्वनाम पदबंध की पहचान के प्रमुख बिन्दुओं का विस्तार से अध्ययन करने की प्रणाली
(ख) क्रियार्थक व भावार्थक संज्ञा पदबंध की पहचान
(ग) कर्म के रूप में संज्ञा का प्रयोग
(घ) हिन्दी व अंग्रेजी में संज्ञा पदबंध का स्वरूप
(ङ) पूरक का अर्थ व अध्ययन प्रणाली
(च) विभिन्न प्रकार की क्रियाओं द्वारा पदबंध की पहचान।

प्रश्नोत्तर :

1. वाक्य किसे कहते हैं। वाक्य में कर्ता की पहचान किस प्रकार की जा सकती है।
2. कर्म क्या है? क्रिया व कर्ता के साथ इसका क्या संबंध है?
3. पदबंध का स्वरूप समझाइए।
4. संबंधसूचक शब्दों का अर्थ उदाहरण सहित समझाइए।
5. वाक्य में उद्देश्य व विधेय की पहचान किस प्रकार की जा सकती है।
6. संज्ञा पदबंध का स्वरूप उदाहरण सहित समझाइए।
7. पूरक का प्रयोग पदबंध के अंतर्गत किस प्रकार महत्वपूर्ण है, विस्तार से समझाइए।
8. रंजक क्रियाओं व सक क्रियाओं का स्वरूप हिन्दी भाषा के आधार पर समझाइए।

प्रायोगिक प्रश्न :

1. हिन्दी व अंग्रेजी के कर्ता, कर्म, क्रिया संबंधी नियम को उदाहरण द्वारा समझाइए।
2. कर्म पहचानिए-

- वह उसे छोड़कर घर चला गया।
- उसका प्रत्येक कार्य समय से पूर्ण होता है।

3. निम्न वाक्यों को समुच्चय बोधक शब्द जोड़कर पूर्ण करें-

क. मैं पढ़ रही थी--- लाइट चली गई।
ख. उसने अलमारी खोली---- पैसे निकाल लिए।

4. संज्ञा पदबंध का विस्तार करें-

क. वह लड़का रवि चला गया।
ख. ---- कमल खाना खाएगा।

5. निम्न वाक्यों में पूरक जोड़ें-

1. उसका घर------ है।
2. वह शिप से----- लौट आया।
3. वे यूरोप---- गए।

6. सामान्य व सहायक क्रिया में उदाहरण सहित अंतर समझाइए।
7. अंग्रेजी के May और Can में अंतर बताइए-
8. कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में बदलें-

क. मैं वहाँ जाऊँगा।
ख. कमल मेरे पास आएगा।

ग. हम फिल्म देखेंगे।

संदर्भ ग्रंथ

1. अच्छी हिन्दी : रामचन्द्र वर्मा
2. भाषा लोचन : सीताराम चतुर्वेदी
3. The choice of words: V. H. Collins
4. Right word: Wrong word: V. H. Collins

संवाद के बिन्दु :

हम जानते हैं कि इस खण्ड को पढ़कर आपने ज्ञान का वर्धन करते हुए भाषा के रोचक क्षेत्र में कदम रखा हैं आइए कुछ प्रश्नों के माध्यम से इस रोचक क्षेत्र की जानकारियों को आपस में बाँटे-

1. आपको क्या लगता है कि वाक्य का निर्माण करते हुए कर्ता, कर्म, क्रिया की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।
2. वाक्य पर विचार करते हुए यह बताइए कि उद्देश्य और विधेय की वाक्य में क्या भूमिका है?
3. पदबंध पर विचार करते हुए संज्ञा पदबंध के कुछ रचनात्मक उदाहरण बनाने की कोशिश करें।
4. सर्वनाम पदबंध के भी कुछ उदाहरण लिखिए और लिखने के बाद देखिए कि पूर्णवाक्य में आपने कितने विशेषणों का प्रयोग किया है।
5. हिन्दी के कुछ कर्तृवाच्यों का आप अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए जैसे-

    1. पेड़ से फल गिरा
    2. मोहन ने आकश की ऊँचाइयों को छुआ
    3. सोहन मुझे प्राणों से भी प्यारा है।

    कोशिश कीजिए! हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी भी बेहतर हो जाए तो बुराई क्या है?

रचनात्मक योगदान :

आपने पदबंध के बारे में विस्तार से पढ़ा। कैसे लगा? जानकारी का बर्धन हुआ? हिन्दी और अंग्रेजी के नियमों से भी आपका परिचय हुआ। अब एक छोटा सा कार्य कीजिएः-

अपने घर के सभी सदस्यों के नाम और उनके गुणों को रेखांकित करते हुए हमारे पास भेज दीजिए। हमें आपके बारे में तो जानकारी मिलेगी ही, साथ ही हम यह भी जान सकेंगे कि (1) आप अपने परिवार की कितनी विशेषताएँ जानते हैं। (2) आपने पदबंध की कितनी जानकारी प्राप्त की।

तो जुट जाइए काम में और भेजिए हमें। यहाँ विद्वानों की एक टीम इंतजार कर रही है जो देखेगी कि पदबंध के संबंध में आपकी जानकारी पर्याप्त है या नहीं।

उदाहरण के लिए आप कहना चाहते हैं कि-

"मेरी बुआ अच्छी हैं तो कहिए कि

"मेरी छोटे से कद वाली, मीठे, अच्छे स्वभाव वाली बुआ अच्छी हैं

संज्ञा पदबंध

तो मिली न जानकारी आपको पदबंध के बारे में और हमें आपके बारे में। तो हो जाइए काम के लिए तैयार। हमें रहेगा आपके जवाब का इंतजार।....

यूनिट 3

मानक वर्तनी

विषय :

भाषा मनुष्य के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण सहयोगी है। इस वाक्य का अर्थ उन व्यक्तियों से पूछा जा सकता है जिनके पास भाषा की शक्ति नहीं होती। भाषा के आध्यम से मनुष्य विचार प्रकट कर सकता है, दूसरों के विचार ग्रहण कर सकता है और अपनी बातचीत के द्वारा दूसरों का ध्यान आकर्षित कर सकता है। भाषा एक ऐसा औजार है जो क्षण भर में मनुष्य को ऊँचाइयों तक पहुँचा सकती है और एक ही क्षण में भाषा का गलत प्रयोग मनुष्य को नजरों से गिरा सकता है।

भाषा का प्रयोग चूँकि हमारे जीवन से संबद्ध है अतः भाषा का सुविचारित एवं सुस्पष्ट होना अत्यंत आवश्यक है। इस खण्ड में हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि भाषा का मानक रूप क्या है?

-भाषा के मानकीकरण की आवश्यकता क्यों है?

- मानकता से क्या अभिप्राय है?

- भाषा का लिखित रूप क्या कहलाता है? लिखित रूप में वैषम्य से क्या भाषा के मानक रूप पर कोई प्रभाव पड़ता है?

सार/विषय क्षेत्र :

भाषा का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उसके भीतर प्रवेश करते ही मनुष्य के समक्ष विचारों का अनन्त क्षेत्र फैल जाता है। भाषा अपने स्वरूप में दो प्रकार की मानी जाती है-

लिखित एवं उच्चरित भाषा

भाषा का अधिकांशतः उच्चरित रूप ही प्रयुक्त होता है। प्रत्येक मनुष्य अपनी बात दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। अनपढ़ से लेकर विद्वान तक भाषा का प्रयोग करता है और आपसी बातचीत के माध्यम से अपनी योग्यता प्रदर्शित भी करता है। आपने यदि किसी गाँव का दौरा किया हो तो अक्सर चौपाल के आस-पास बैठे वयोवृद्ध लोगों को जरूर देखा होगा जिनमें निरन्तर वक्ता-श्रोता के विकसित होते संबंध को देखा जा सकता है। एक व्यक्ति की कही गई बात को दूसरे समस्त व्यक्ति ध्यान से सुनते हैं और फिर दूसरे व्यक्ति के माध्यम से इसी संबंध का विकास होता है।

इसी प्रकार जब पत्रकारिता पर चर्चा करते हुए समाचार के विकास की बात की जाती है तो अक्सर विद्वजन उस नगाड़े वाले का जिक्र करना नहीं भूलते जो ढोल बजाकर समस्त गाँव को सूचनाएँ पहुँचाने का कार्य करता था। कहा जा सकता है कि भाषा का प्रयोग प्रत्येक स्थान, प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है। भाषा का मौलिक और अनिवार्य गुण है- सम्प्रेषण। सम्प्रेषण का अर्थ मात्र अपनी बात कहने मात्र से पूर्ण नहीं होता बल्कि इसकी अपनी प्रक्रिया है जिसे इस प्रकार समझा जा सकता है-

वक्ता- संदेश- श्रोता

वक्ता के द्वारा कहे गए संदेश को श्रोता तक पहुँचना अनिवार्य है। संदेश सही और स्पष्ट ढंग से पहुँचे, इसके लिए माध्यम का भी उचित होना जरूरी है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत संदेश की महत्वपूर्ण भूमिका है। संदेश तभी सही रूप

में सम्प्रेषित होगा जब भाषा का सही प्रयोग किया जाए। इसीलिए भाषा के मानक रूप की संकल्पना का ज्ञान आवश्यक है।

विषय प्रवेश :

भाषा का मानकीकरण सम्प्रेषण के लिए आवश्यक है। शिक्षित व्यक्तियों के मध्य बातचीत के लिए ही नहीं बल्कि विभिन्न विषयों की जानकारी, ज्ञान वर्धन के लिए भाषा की मानकता एक महत्वपूर्ण शर्त है। सर्वप्रथम तो हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि मानकता का अर्थ क्या है?

(क) मानकता से अभिप्राय :

मानकता का अर्थ है- भाषा का व्यवस्थित रूप। मानक रूप भाषा के उस रूप को कहा जाता है जिसका प्रयोग शिक्षित वर्ग द्वारा किया जाता है। शिक्षित वर्ग पढ़ने-लिखने से लेकर ज्ञान-विज्ञान की परिचर्चा हेतु मानक शब्दों का प्रयोग करता है। मानकता का एक अन्य अर्थ आजकल अंग्रेजीदां होने से भी लिया जा रहा है परन्तु अंग्रेजीदां होना भिन्न है। मानक होने से इसका कोई संबंध नहीं।

मानक भाषा की आवश्यकता :

यहाँ आपके मन में एक प्रश्न उठ सकता है कि मानक शब्दों की आवश्यकता क्यों? प्रश्न स्वाभाविक है। उत्तर में समझाया जा सकता है कि एक ही क्षेत्र में प्रचलित अनेक नामों में से किसी एक को चुन लेने से सम्प्रेषण में सुविधा होती है। सोचिए यदि विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न व्यक्ति एकत्र हों और एक ही वस्तु के लिए एक ही भाषा के स्तर पर अलग-अलग शब्दों का प्रयोग करने लगें तो क्या होगा? कितनी अराजकता फैल जाएगी और सम्प्रेषण भी संभव नहीं होगा। यही सोचकर मानक भाषा की संकल्पना पर विचार किया गया।

उदाहरण के लिए :

व्यक्ति-विशेष के लिए 'मैं' शब्द का प्रयोग पुरुषवाचक सर्वनाम के अंतर्गत किया जाता है परन्तु पूर्वी क्षेत्र के अनेक व्यक्ति अपने लिए 'हम' शब्द का प्रयोग करते हैं। यद्यपि 'हम' शब्द से भी अर्थ सम्प्रेषित हो जाता है परन्तु 'हम' का प्रयोग मानक भाषा के अंतर्गत द्विवचन के रूप में किया जाता है। मानक रूप में निजवाचक के रूप में 'मैं' का प्रयोग किया जाता है।

विषय प्रतिपादन :

मानक भाषा के अर्थ से अब आप परिचित हो चुके हैं। अब हम भाषा के लिखित रूप की चर्चा करेंगे क्योंकि मानक भाषा का संबंध लिखित भाषा से होता है।

लिखित भाषा का वैशिष्ट्य :

लिखित भाषा का प्रयोग शिक्षित वर्ग द्वारा किया जाता है। भाषा का लिखित रूप ही मानक हो सकता है, मौखिक नहीं। लिखित रूप में भी मानकीकरण की आवश्यकता इसलिए होती है ताकि-

1. एक ही संदर्भ के लिए विभिन्न शब्द प्रयोग से भ्रम की गुंजाइश न रहे।
2. शब्द चयन करने से अन्य प्रयोगों की संभावना सीमित हो जाए।

उदाहरण के लिएः- 'स्कूल के लिए 'इस्कूल'

'अस्कूल'

'सकूल'

'स्कूल' में से एक को मानक माना जाना आवश्यक है ताकि शिक्षित वर्ग में प्रयोग के स्तर पर समानता आ सके। इसी प्रकार अंग्रेजी के अनेक शब्दों के लिए हिन्दी में दो या दो से अधिक अर्थ प्रचलित हैं, उन्हें सीमित किया जा

सके यथा-

Equality - समता या समानता?

Brotherhood - भाईचारा या भ्रातृत्व?

इस भ्रम की समाप्ति के लिए मानकीकरण की अत्यंत आवश्यकता मानी गई है।

इस आधार पर लिखित भाषा की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हो सकती हैं-

-लिखित भाषा व्याकरणवद्ध होती है। व्याकरणिक नियमों के आधार पर भाषा के रूप, पद, वाक्यों का निर्माण किया जाता है।

- लिखित भाषा के अंतर्गत ज्ञान-विज्ञान की रचनाएँ, साहित्य सृजन किया जाता है।

- लिखित भाषा में स्थायित्व पाया जाता है। लिखित भाषा को समय नष्ट नहीं करता बल्कि एक युग की पहचान को दूसरे युग तक ले जाने का कार्य लिखित भाषा के द्वारा ही संपन्न होता है।

- मानकता की पहचान लिखित भाषा के संदर्भ में ही की जाती है। लिखित भाशा का मानक होना आवश्यक है। वर्तनी का अमानक रूप लिखित रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

लिखित व मौखिक भाषा :

भाषा के दोनों रूप संबद्ध भी है और अलग भी। भाषा जिस रूप में लिखी जाती है, ठीक उसी रूप में उसे बोला जाना संभव नहीं परन्तु मौखिक रूप में प्रयुक्त भाषा का प्रयोग संदर्भ विशेष के लिए किया जा सकता है यथा- आपसी बातचीत का प्रसंग किसी रचना विशेष के अंतर्गत किया जा सकता है यथा-

चित्र

आपसी बातचीत का प्रसंग

ऐसी किसी भी बातचीत का प्रसंग लिखित भाषा के अंतर्गत प्रयुक्त किया जा सकता है। परन्तु लिखित भाषा के किसी भाषण को सामान्य बातचीत में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता।

परन्तु यह भी सत्य है कि यदि किसी औपचारिक समारोह में किसी भाषण का वाचन किया जाना हो तो लिखित भाषण का प्रयोग ही किया जाता है ताकि श्रोताओं को आकर्षित किया जा सके।

भाषा व लिपि का संबंध :

भाषा का लिखित रूप लिपि कहलाता है। प्रत्येक भाषा की अपनी विशिष्ट लिपि होती है जिसमें उस भाषा का लिखित रूप लिपिवद्ध किया जाता है। मानक वर्तनी का चुनाव लिपि लेखन के लिए आवश्यक है ताकि भाषा के स्तर पर एकरूपता लाई जा सके।

प्रत्येक लिपि के निर्माण के आरम्भ में सर्वप्रथम समस्या वर्तनी के संदर्भ में उत्पन्न होती हैं यदि वर्तनी के संदर्भ में एकाधिक चिन्ह् लिपि में मौजूद हों तो भाषा संबंधी समस्या उत्पन्न होती है। यथा हिन्दी वर्तनी में भी अनेक ऐसे चिन्ह् हैं जिनके दो रूप प्रचलित हैं यथा-

ल झ ख ख अ अ

आप इन अक्षरों से परिचित अवश्य होंगे। वर्तनी के इन दो रूपों में से किसी एक को मानक माना जाना अनिवार्य था ताकि लेखन के साथ-साथ टाइपिंग, कम्प्यूटिंग, मुद्रण के स्तर पर एकरूपता लाई जा सके।

यहाँ आपको यह भी ध्यान रखना है कि वर्तनी के किसी एक रूप को मानक मान लेने का अर्थ यह नहीं है कि अन्य सभी रूप गलत मान लिए जाएँ। अन्य रूपों को गलत न मानकर अमानक माना जाता है तथा यह प्रयास किया जाता है कि उनका प्रचलन कम से कम हो ताकि मानक रूपों का प्रयोग अधिक से अधिक किया जा सके।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने हिन्दी वर्तनी की मानकता के निर्धारण हेतु समय-समय पर निर्देश जारी किए हैं। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रस्तावित मानक वर्तनी संबंधी नियम इस प्रकार हैं-

हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण

अ आ इ ई उ ऊ

ए ऐ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व श ष स ह

ऄ क़ ख़ ग़ ड़ ढ़ ज़ फ़ व़

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने लिपि के संबंध में विचार करते हुए वर्तनी को लिपि का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष माना है। यदि किसी लिपि में एक अक्षर के लिए दो लिपि चिन्ह् मौजूद हों तो मानकीकरण में समस्या होती है। इस समस्या के समाधान के लिए केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रस्तावित एवं स्वीकृत मानक वर्तनी संबंधी नियम इस प्रकार हैं-

1. संयुक्त वर्ण

(क) खड़ी पाई वाले व्यंजन

खड़ी पाई वाले व्यंजनों का संयुक्त रूप खड़ी पाई को हटाकर ही बनाया जाना चाहिए यथा :

ख्याति, लग्न,

कच्चा, छज्जा श्लोक
नगण्य राष्ट्रीय
कुत्ता, पथ्य, ध्वनि
न्यास स्वीकृत
प्यास, डिब्बा, सभ्य, रम्य यक्ष्मा
शय्या त्र्यंबक
उल्लेख

(ख) अन्य व्यंजन

अ) 'क' और 'फ' के संयुक्ताक्षर :

संयुक्त, पक्का, दफ्तर आदि की तरह बनाए जाएं न कि संयुक्त, पक्का, दफ्तर की तर

आ) ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ, द, और ह के संयुक्ताक्षर हल चिन्ह् लगाकर ही बनाए जाएँ यथा-

(वांग्मय, लट्टू, बुड्ढा, चिह्न, ब्रह्मा, नहीं)

वांग्मय, लट्टू, बुड्ढा, विद्या, चिह्न, ब्रह्मा

इ) संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप यथावत रहेंगे यथा : प्रकार, धर्म, राष्ट्र

ई) 'त्र' का प्रचलित रूप ही मान्य होगा। इसे 'श्र' के रूप में नहीं लिखा जाएगा। त +र के संयुक्त रूप के लिए 'त्र' और 'त्र' दोनों रूपों में से किसी एक के प्रयोग की छूट होगी। किन्तु 'क्र' को 'क' के रूप में नहीं लिखा जाएगा।

उ) हल् चिह्न युक्त वर्ण से बनने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा न कि पूरे युग्म से पूर्व यथा : कुट्टिम, द्वितीय, बुद्धिमान, चिह्नित आदि (कुट- टिम, द्वितीय, बुद्-धिमान, चिह्नित नहीं)

ऊ) संस्कृत में संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से भी लिखे जा सकेंगे,

उदाहरणार्थ :

संयुक्त, चिह्न, विद्या, चंचल, विद्वान, वृद्ध अंक, द्वितीय, बुद्धि आदि।

2) विभक्ति चिन्ह् :

(क) हिन्दी के विभक्ति- चिन्ह् सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रातिपादिक से पृथ लिखे जाएँ- जैसे राम ने, राम को, राम से आदि तथा स्त्री ने, स्त्री को, स्त्री से आदि। सर्वनाम शब्दों में ये चिन्ह् प्रतिपादिक के साथ मिलकर लिखे जाएं जैसे- उसने उसको, उससे उस पर आदि।

(ख) सर्वनामों के साथ यदि दो विभक्ति चिन्ह् हों तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा पृथक लिखा जाए जैसे- उसके लिए, इसमें से।

(ग) सर्वनाम और विभक्ति के बीच 'ही' 'तक' आदि का निपात हो तो विभक्ति को पृथक लिखा जाए जैसे- आप ही के लिए, मुझ तक को।

3) क्रियापद

संयुक्त क्रियाओं में सभी अंगभूत क्रियाएँ पृथक-पृथक लिखी जाएँ जैसे-पढ़ा करता है, आ सकता है, जाया करता है, खाया करता है, जा सकता है, कर सकता है, किया करता था, पढ़ा करता था, खेला करेगा, घूमता रहेगा, बढ़ते चले जा रहे हैं आदि।

4) **हाइफन**

हाइफन का विधान स्पष्टता के लिए किया गया है।

(क) द्बंद्व समास में पदों के बीच हाइफन रखा जाए जैसे-
राम-लक्ष्मण, शिव-पार्वती-संवाद, देख-रेख, चाल-चलन, हंसी-मजाक, लेन-देन, पढ़ना-लिखना, खाना-पीना, खेलना-कूदना आदि।
(ख) सा-जैसा आदि से पूर्व हाइफन रखा जाए जैसे- तुम-सा, राम-जैसा, चाकू से तीखे।
(ग) तत्पुरुष समास में हाइफन का प्रयोग केवल वहीं किया जाए, जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो, अन्यथा नहीं, जैसे भू-तत्व। सामान्यतः तत्पुरुष समासों में हाइफन लगाने की आवश्यकता नहीं है जैसे- रामराज्य, राजकुमार, गंगाजल, ग्रामवासी, आत्महत्या आदि।

इसी तरह यदि अ-नख (बिना नख का) समस्त पद में ही हाइफन न लगाया जाए तो उसे 'अनख' पढ़े जाने से क्रोध का अर्थ भी निकल सकता है। अ-नति (नम्रता का अभाव) अनति (थोड़ा)

अ-परस (जिसे किसी ने न छुआ हो) अपरस (एक चर्म रोग)
भू-तत्व (पृथ्वी-तत्व) भूतत्व (भूत होने का भाव)
आदि समस्त पदों की भी यही स्थिति है। ये सभी युग्म वर्तनी और अर्थ दोनों दृष्टियों से भिन्न-भिन्न शब्द है।
(घ) कठिन संधियों से बचने के लिए भी हाइफन का प्रयोग किया जा सकता है जैसे- द्वि-अक्षर, छवि-अर्थक आदि।

5) अव्यय

'तक', 'साथ' आदि अव्यय सदापृथक लिखे जाएँ जैसे-आपके साथ, यहाँ तकं
इस नियम को कुछ और उदाहरण देकर स्पष्ट करना आवश्यक है। हिन्दी में आह, ओह, अहा, ऐ, ही, तो, सो, भी, न, जब, तब, कब, यहाँ, वहाँ, कहाँ, सदा, क्या, श्री, जी, तक, भर, मात्र, साथ, कि, किंतु, मगर, लेकिन, चाहे था, अथवा, तथा, यथा और आदि अनेक प्रकार के भावों का बोध कराने वाले अव्यय हैं। कुछ अव्ययों के आगे विभक्ति चिन्ह् भी आते हैं- जैसे अब से, तब से, यहाँ से, वहाँ से, सदा से आदि।

नियम के अनुसार अव्यय सदा पृथक लिखे जाने चाहिए जैसे- आप ही के लिए, मुझ तक को, आपके साथ, गज भर कपड़ा, देश भर, रातभर, दिनभर, वह इतना भर कर दे, मुझे जाने तो दो, काम भी नहीं जाना, पचास रुपए मात्र आदि। सम्मानार्थक 'श्री' और 'जी' अव्यय भी पृथक लिखे जाएँ जैसे- श्री श्रीराम, कन्हैयालाल जी, महात्मा जी आदि। समस्त पदों में प्रति, मात्र, यथा आदि अव्यय पृथक नहीं लिखे जाएँगे-
जैसे- प्रतिदिन, प्रतिशत, मानवमात्र, निमित्तमात्र, यथासमय, यथोचित आदि। यह सर्वविदित नियम है कि समास होने पर समस्त पद एक माना जाता है। अतः उसे व्यस्त रूप में न लिखकर एक साथ लिखना ही संगत है।

(6) श्रुतिमूलक 'य' 'व'

क) जहाँ श्रुतिमूलक य, व का प्रयोग विकल्प से होता है, वहाँ न किया जाए अर्थात् किए-किये, नई-नयी, हुआ, हुवा आदि में से पहले (स्वरात्मक) रूपों का ही प्रयोग किया जाए। यह नियम क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि सभी रूपों और स्थितियों में लागू माना जाए जैसे- दिखाए गए, राम के लिए, पुस्तक लिए हुए, नई दिल्ली आदि।
(ख) जहाँ 'य' श्रुतिमूलक व्याकरणिक परिवर्तन न होकर शब्द का ही मूल तत्व हो वहाँ वैकल्पिक श्रुतिमूलक स्वरात्मक परिवर्तन की आवश्यकता नही है जैसे- स्थायी, अव्ययी भाव, दायित्व आदि। यहाँ स्थाई, अव्यई भाव, दाइत्व नहीं लिखा जाएगा।

(7) अनुस्वार तथा अनुनासिकता चिन्ह् (चंद्रबिन्दु)

अनुस्वार (ं) और अनुनासिकता चिन्ह् (ँ) दोनों प्रचलित रहेंगे।
(क) संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ पंचमाक्षर के बाद सवर्गीय शेष चार वर्णों में से कोई वर्ण हो तो एकरूपता और मुद्रण/लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए जैसे- गंगा, चंचल, ठंडा, संध्या, संपादक आदि

में पंचमाक्षर के बाद उसी वर्ग का वर्ण आगे आता है अतः पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग होगा (गड्वगा, चंचल, ठण्डा संध्या, संपादक का नहीं) यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ग आए अथवा नहीं पंचमाक्षर दोबारा आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में परिवर्तित नहीं होगा जैसे- वाड्मय, अन्य, अन्न, सम्मेलन, सम्मति, चिन्मय, उन्मुख आदि। अतः वांमच, अंय, अंन, संमेलन, संमति, चिंमय, उंमुख, आदि रूप ग्राह्य नहीं है।

(ख) चंद्रबिन्दु के बिना प्रायः अर्थ में श्रम की गुंजाइश रहती है जैसे- हंसः हँस, अंगना, अँगना आदि में। अतएव ऐसे भ्रम को दूर करने के लिए चंद्रबिन्दु का प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए। किन्तु जहाँ (विशेषकर शिरोरेखा के ऊपर जुड़ने वाली मात्रा के साथ) चंद्रबिन्दु के प्रयोग से छपाई आदि में बहुत कठिनाई हो और चंद्रबिन्दु के स्थान पर बिन्दु (अुनस्वार चिन्ह्) का प्रयोग किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न हो, वहाँ चन्द्रबिन्दु के स्थान पर बिन्दु के प्रयोग की छूट दी जा सकती है जैसे- नहीं, मैं, मैं। कविता आदि के प्रसंग में छंद की दृष्टि से चन्द्रबिन्दु का यथास्थान अवश्य प्रयोग किया जाए। इसी प्रकार छोटे बच्चों की प्रवेशिकाओं में जहाँ चन्द्रबिन्दु का उच्चारण सिखाना अभीष्ट हो, वहाँ उसका प्रयोग सर्वत्र किया जाए। जैसे- कहाँ, हँसना, आँगन, सवाँरना, मैं, में, नहीं।

(8) विदेशी ध्वनियाँ :

(क) अरबी-फारसी या अंग्रेजी मूलक वे शब्द जो हिन्दी के अंग बन चुके हैं, और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिन्दी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है, हिन्दी रूप में ही स्वीकार किए जा सकते हैं जैसे- कलम, किला, दाग आदि (क़लम, क़िला, दाग़ नहीं) पर जहाँ उनका शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग अभीष्ट हो अथवा उच्चारणगत भेद बताना आवश्यक हो, वहाँ उनके हिन्दी में प्रचलित रूपों यथास्थान नुक्ते लगाए जाएँ जैसे- खाना, ख्+ाना, राजः राज+, फनः फ़न। सारांश रूप में कहा जा सकता है कि अरबी-फारसी एवं अंग्रेजी की मुख्यतः पाँच ध्वनियाँ (क़ ख्+ा ग़ ज+ फ़) हिन्दी में आई हैं जिनमें से दो (क़ ग़) तो हिन्दी उच्चारण (क ग) में परिवर्तित हो गई हैं एक (ख्+ा) लगभग हिन्दी (ख) में की प्रक्रिया में है और शेष दो (ज+ फ़) अपना अस्तित्व खोने/बनाए रखने के लिए संघर्षरत हैं।

(ख) अंग्रेजी के जिन शब्दों में अर्धविवत 'ओ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके शुद्ध रूप का हिन्दी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्रा 'ा' के ऊपर अर्थचन्द्र का प्रयोग किया जाए (ऑ, ॉ)। जहाँ तक अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं से नए शब्द ग्रहण करने और उनके देवनागरी लिप्यंतरण का संबंध है, अगस्त-सितम्बर 1962 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा वैज्ञानिक शब्दावली पर आयोजित भाषाविदों की संगोष्ठी में अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के देवनागरी लिप्यंतरण के संबंध में की गई सिफारिश उल्लेखनीय है। उसमें यह कहा गया है कि अंग्रेजी शब्दों का देवनागरी लिप्यंतरण इतना क्लिष्ट नहीं होना चाहिए कि उसके लिए वर्तमान देवनागरी वर्णों में अनेक नए संकेत-चिन्ह् लगाने पड़े। अंग्रेजी शब्दों का देवनागरी लिप्यंतरण मानक अंग्रेजी उच्चारण के अधिक से अधिक निकट होना चाहिए। उनमें भारतीय शिक्षित समाज में प्रचलित उच्चारण संबंधी थोड़े-बहुत परिवर्तन किए जा सकते हैं। अन्य भाषाओं के शब्दों के संबंध में भी यही नियम लागू होना चाहिए।

ग) हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके दो-दो रूप बराबर चल रहे हैं। विद्वत्व समाज में दोनों रूपों की एक-सी मान्यता है। फिलहाल इनकी एकरूपता आवश्यक नहीं समझी गई है। कुछ उदाहरण हैं-

गरदन/गर्दन, गरमी/गर्मी, बरफ/बर्फ, बिलकुल/बिल्कुल, सरदी/सर्दी, कुरसी/कुर्सी, भरती/भर्ती, फुरसत/फुर्सत, बरदाश्त/बर्दाश्त, वापिस/वापस, आखीर/आखिर, बरतन/बर्तन, दोबारा/दुबारा, दुकान/दूकान, बीमारी/बिमारी आदि।

(9) हल चिन्ह्

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी में सामान्यतः संस्कृत रूप ही रखा जाए परन्तु जिन शब्दों के प्रयोग में हिन्दी में हल् चिन्ह् लुप्त हो चुका है, उनमें उसको फिर से लगाने का यत्न न किया जाए जैसे- 'महान'

'विद्वान' आदि के 'न' में।

(10) स्वन-परिवर्तन

संस्कृतमूलक तत्समशब्दों की वर्तनी को ज्यों-त्यों ग्रहण किया जाए। अतः 'ब्रह्मा को 'ब्रम्हा' 'चिह्न' को 'चिन्ह्' 'उऋण' को 'उरिण' में बदलना उचित नहीं होगा। इसी प्रकार ग्रहीत, दृष्टव्य, प्रदर्शिनी, अत्याधिक, अनाधिकार आदि अशुद्ध प्रयोग ग्राह्य नहीं है। इनके स्थान पर क्रमशः 'गृहीत' द्रष्टव्य, प्रदर्शनी, अत्यधिक, अनाधिकार ही लिखना चाहिए। जिन तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनों के संयोग की स्थिति में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो गया है, उसे न लिखने की छूट है जैसे- अर्द्ध/अर्ध, उज्ज्वल/उज्वल, तत्त्व/तत्व आदि।

(11) विसर्ग :

संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है, वे यदि तत्सम रूप में प्रयुक्त हों तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए जैसे दुःखानुभूति में। यदि उस शब्द के तद्भव रूप में विसर्ग का लोप हो चुका हो तो उस रूप में विसर्ग के बिना भी काम चल जाएगा जैसे- दुख-सुख के साथी।

(12) 'ऐ' 'औ' का प्रयोग :

हिन्दी में ऐ ' ै ' औ 'औ' का प्रयोग दो प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए होता है। पहले प्रकार की ध्वनियाँ 'है', 'और' आदि में है तथा दूसरे प्रकार की 'गवैया' 'कौवा' में। इन दोनों ही प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए इन्हीं चिन्हें (ऐ ै ओ औ) का प्रयोग किया जाए। 'गवय्या' 'कव्वा' आदि संशोधनों की आवश्यकता नहीं है।

(13) पूर्वकालिक प्रत्यय :

पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए जैसे मिलाकर, खा-पीकर, रो-रोकर आदि।

(14) अन्य नियम :

क) शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा।

ख) फुलस्टॉप को छोड़कर शेष विराम आदि चिन्ह् वही ग्रहण कर लिए जाएँ, जो अंग्रेजी में प्रचलित हैं यथा- (. -, ; ? ! त्र)

विसर्ग के चिन्ह् को ही कोलन का चिन्ह् मान लिया जाए। पूर्ण विराम के लिए खड़ी पाई (।) का प्रयोग किया जाए।

नियमों के स्वरूप का स्पष्टीकरण :

अभी हमने मानक वर्तनी संबंधी केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के नियमों की जानकारी प्राप्त की। अब हम वर्तनी से संबंधित शब्दावली का अर्थ समझने व ग्रहण करने का प्रयास करेंगे।

विभक्ति :

विभक्ति का अर्थ है- कारक चिन्ह्। वे सभी कारक चिन्ह् जिनका प्रयोग शब्द को पद के रूप में परिवर्तित करने हेतु किया जाता है। संस्कृत में विभक्ति संबंधी नियम इस प्रकार हैं:-

1. कर्ता ने	(कार्य का वाहक)				मनोज ने फल (कर्ता) खाया		
2. कर्म को	(कर्ता द्वारा	वह मोहन					

	किया जाने वाला कार्य)	को मारता है।					
3. करण से	(संबंध)					उससे खाया नहीं जाता	
4. संप्रदान के लिए					सर्वनाम करण		
							राम के लिए लड़की ढूंढो
5. अपदान से	(अलग करना)						
6. संबंध का, की, के					उसका बेटा होशियार है।		
7. अधिकरण में, पर, पे					पेड़ पर मत चढ़ो		
8. संबोधन, हे, अरे					अरे राम! कैसे हो।		

क्रिया पद :

क्रिया का अर्थ कार्य करने की गति से लिया जाता है। क्रिया व्यक्ति की गतिशीलता को दर्शाता हैं सकर्मक एवं अकर्मक रूप में क्रिया के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्दों को क्रियापद कहा जाता है।

जैसे-

पढ़ना (क्रिया)
वह पुस्तक पढ़ता (क्रिया पद) है।
वह पुस्तक पढ़ता रहता है

उसे पुस्तक पढ़नी पड़ती है।
उसे पुस्तक पढ़नी चाहिए।
उसे पुस्तक पढ़नी होगी।
खेलना (क्रिया)
वह खेलता है।
वह खेलता रहता है।

क्रिया का प्रयोग वाक्य में अनेक रूपों में किया जाता है। यह रूप क्रिया पद कहलाते हैं।

हाइफन :

हाइफन के लिए '-' का प्रयोग किया जाता है। दो शब्दों में पार्थक्य दर्शाने और संबंध बताने के लिए हाइफन का प्रयोग किया जाता है। द्वन्द समास के अंतर्गत इसका प्रयोग सर्वाधिक होता है यथा-

दिन-दिन (प्रत्येक दिन)

बार-बार (प्रत्येक बार)

घड़ी-घड़ी (प्रत्येक क्षण)

अव्यय :

शब्द मात्र से ध्वनि निकलती है- जिसे व्यय न किया जा सके। अव्यय शब्द जिस रूप में आते हैं, वाक्य के अंतर्गत उनका प्रयोग उसी रूप में किया जाता है। इन शब्दों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जाता यथा-

वहा कहाँ चला गया।

वह रात भर काम करता रहा।

मुझे उसके साथ जाना है।

शब्द के स्तर पर मानक प्रयोग :

मानकता की समस्या मात्र वर्तनी के संदर्भ में ही नहीं बल्कि शब्द के स्तर पर भी उत्पन्न होती है। शब्द के स्तर पर भ्रम की गुंजाइश अधिक है क्योंकि स्थान-स्थान पर शब्द-परिवर्तन के कारण शब्दों में भ्रम की संभावना बनी रहती है। अतः शब्दों के स्तर पर मानकता का होना सर्वाधिक आवश्यक है यथा-

- Computer के लिए कम्प्यूटर भी है और संगणक भी।

- Draft के लिए प्रारूप भी है मसौदा भी।

इस प्रकार

- असंगत कहा जाए या असम्बद्ध।
- संचार कहा जाए सम्प्रेषण।

इन शब्दों में किसे मानक माना जाए और किसे अमानक। यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है।

विवेचन :

भाषा के स्तर पर तीन रूपों का अध्ययन महत्वपूर्ण है- ध्वनि, व्याकरण और अर्थ। इन तीनों से मिलकर

ही भाषा संपूर्ण होती है। भाषा के व्याकरणिक स्वरूप के अंतर्गत मानक वर्तनी की संकल्पना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वर्तनी के मानक रूप का अध्ययन करते हुए हमने निम्न तत्वों के संबंध में बनने वाली नियमावली का विस्तार से अध्ययन किया-

1. खड़ी पाई वाले व्यंजन 2. अन्य व्यंजन

व्यंजनों के प्रयोग के लिए मानक नियम बनाए गए हैं। उन्हीं नियमों के अनुरूप प्रयोग के लिए केन्द्रीय निदेशालय ने व्यक्तियों को प्रोत्साहित किया ताकि भाषा के शुद्ध रूप का विकास हो सके।

3.**विभक्ति चिन्ह्**

विभक्ति चिन्हें को ही कारक चिन्ह् कहा जाता है। कारक चिन्हें के प्रयोग हिन्दी में विशेषकर किया जाता है। अंग्रेजी में कारक चिन्ह् नहीं हैं जैसे-

Ram eats food Sita plays a game

She has been (Helping verb) doing this work from a long.

हिन्दी में अधिकांश वाक्यों में कारक चिन्हें का प्रयोग होता है। मात्र प्रयोग ही नहीं होता बल्कि वाक्यों के अर्थ में अंतर भी आ जाता है। अतः इनका प्रयोग ठीक ढंग से नियमानुसार किया जाना चाहिए।

क्रियापद : क्रियाओं का प्रयोग कर्ता के अनुरूप किया जाता है। प्रत्येक क्रिया अलग-अलग लिखी जाना आवश्यक है यथा-

मोहन खाना खाता है, खा रहा है आदि।

अव्यय का प्रयोग बिना किसी परिवर्तन के किया जाता है। संज्ञा, सर्वनाम के साथ इसका रूप परिवर्तित नहीं होता। इसी प्रकार मानक वर्तनी के अन्य वर्तनी संबंधी नियम बनाए गए हैं जिनका प्रयोग भाषा के शुद्ध रूप को प्रोत्साहन देता है।

सन् 1980 के फरवरी माह में देवनागरी वर्णमाला में परिवर्धन किया गया जिसमें विशेषक चिन्हें को जोड़ा गया जो इस प्रकार हैं-

विशेषक चिन्ह् :	
स्वर	
1. ह्स्व ए और ओ	ऐ ओ
मात्राएँ	े ो
2. कश्मीरी के विशिष्ट स्वर	ऄ ऍ अे ओ ऍ ऑ
मात्राएँ	ु ू ा ा ॉ ॉ
व्यंजन	
1. कश्मीरी च वर्ग	च छ
2. सिंधी अंत+स्फोटी व्यंजन	ग ज ड ब
3. तमिल और मलयालम	
4. बंगला- असमिया	य+
5. दक्षिण भारतीय भाषाओं	र
के र' का कठोर उच्चारण	
6. तमिल	न

7. मलयालम का वर्त्स्य उच्चारण न	
8. फारसी-अरबी और अंग्रेजी से	क़ ख़ ग़ ज+ फ़
ग्रहीत स्वन	
9. उर्दू ऐन (छ) स्थिति के अनुसार	अ आ (आदत)

निष्कर्ष :

इस इकाई के अध्ययन के दौरान हमने जाना कि-

- भाषा का सही प्रयोग मनुष्य के विकास की आवश्यक शर्त है।
- भाषा के मूलतः दो रूप हैं- लिखित एवं उच्चरित भाषा। लिखित भाषा के लिए ही मानकीकरण प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है।
- सम्प्रेषण के लिए मात्र विचारों का प्रकटीकरण ही आवश्यक नहीं है बल्कि वक्ता और श्रोता के मध्य संबंध व समझदारी का होना भी जरूरी है।
- मानक भाषा की आवश्यकता इसीलिए है ताकि एक भाषा से संबद्ध सभी व्यक्तियों को समान स्तर पर भाषिक प्रयोग हेतु तैयार किया जा सके।
- मानकता का अर्थ है- शिक्षित समाज में प्रचलित प्रयोग। शिक्षित वर्ग मानक भाषा का प्रयोग विभिन्न प्रयोजन मूलक कार्यों के लिए करता है।

अतः हमने सीखा कि-

- उच्चारण के स्तर पर भाषा किस प्रकार का रूप धारण करती है।
- लिखित भाषा उच्चरित भाषा से विशिष्ट है क्योंकि लेखन हमारी धरोहर, हमारी संपदा का मूल स्रोत है। - युगों-युगों तक हमारे ज्ञान का प्रसार लेखन द्वारा ही संभव है।
- लिखित व मौखिक भाषा परस्पर संबद्ध हैं विरोधी नहीं।
- लिपि का अर्थ तथा भाषा व लिपि का संबंध।
- मानक वर्तनी के संबंध में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा दी गई सूचनाएँ तथा विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से वर्तनी की सही पहचान।
- विभिन्न पारिभाषिक शब्दों का अर्थ व उदाहरण सहित प्रयोग
- विभक्ति, क्रियापद, हाइफन व अव्यय की पहचान।
- शब्द व वाक्य के स्तर पर मानक प्रयोग।

प्रश्नोत्तर :

निम्न सामान्य प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

- मनुष्य के जीवन में भाषा का क्या महत्व है?
- भाषा के कितने रूप हैं? उच्चरित एवं लिखित भाषा में अंतर बताइए।
- मानक शब्द का क्या अभिप्राय है? मानक भाषा की आवश्यकता क्यों है?
- लिखित भाषा के वैशिष्ट्म का मूल्यांकन कीजिए।

-भाषा व लिपि का सह-संबंध बताइए।

- लिपि का आरंभिक रूप क्या कहलाता है? लिपि को मानक बनाने के संदर्भ में किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

- केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने मानक वर्तनी संबंधी किन-किन नियमों के अनुपालन संबंधी निर्देश दिए हैं।
- 'अव्यय' एवं 'विदेशी ध्वनियों' के संबंधा में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के नियमों का वर्णन करें।
- 'अव्यय' से आप क्या समझते हैं। उदाहरा देकर स्पष्ट करें।
- मानक वर्तनी की आवश्यकता, उपयोगिता का उल्लेख करते हुए वर्तनी की एकरूपता की आवश्यकता को समझाइए।

प्रायोगिक प्रश्न :

1.विभिन्न शब्दों के मानक रूप लिखें-

1. इस्टेशन 2. सोफा
3. जरूरत 4. इगारह
5. अकलमंद 6. मुनाफा

2.अव्यय छाँटिए और वाक्य बनाइएः-

तक, साथ, के, पर, क्या, कितना, ही, बार, खेल, अरे

3.निम्न के लिए विभक्ति चिन्ह् बताकर वाक्य प्रयोग करें-

कर्म :-- सम्बोधन ------

अपादान :------

4.अपादान एवं करण में उदाहरण द्वारा अंतर स्पष्ट करें।

5.'य' 'व' संबंधी नियम के अनुसार निम्न में से कौन से शब्द सही हैं-

(क) गए-गये
(ख) दिखाए-दिखाये
(ग) स्थाई-स्थायी
(घ) कमाई-कमायी

6. मानक शब्द छाँटिए :

1. उज्ज्वल उज्वल
2. महान महान्
3. सम्बल समबल
4. नींद नीन्द
5. पेन पैन
6. मिठाई मिठायी

संवाद के बिन्दु :

आपने अभी इस खंड को पढ़ा। इस खण्ड को पढ़कर कुछ जिज्ञासाओं का उदय आपके मन में भी हुआ होगा। आइए कुछ प्रश्नों के माध्यम से इन जिज्ञासाओं पर विचार करें-

1. भाषा के नवीन क्षेत्र में प्रवेश करके आपको कैसा लगा। भाषा के उच्चरित रूप के कुछ उदाहरण लिखित रचनाओं से छाँटिए जैसे- 'शेखर एक जीवन' का कोई अंश।
2. उच्चरित भाषा के कुछ उदाहरणों का सचित्र वर्णन करें यथा-

- पापा फिल्म देखने चलो न!

- नहीं बेटा आज नहीं!

-प्लीज पापा।

- चलो! कौन सी....

- चलो न पापा। कोई भी....

3. आप विचार कीजिए कि वक्ता और श्रोता के मध्य संदेश के अतिरिक्त और किन-किन चीजों की आवश्यकता है?

4. सम्प्रेषण का अर्थ समझाते हुए बताइए कि आपके अनुसार सम्प्रेषण की प्रक्रिया में कौन-कौन से बिन्दु निहित हैं।

5. क्या आप मानक हिन्दी वर्णमाला से परिचित हैं? यदि हाँ तो 'स्वर' और 'व्यंजन' के साथ-साथ देवनागरी अंक भी लिखें। यदि नहीं तो पृष्ठ पलटिए और याद कीजिए वर्णमाला।

6. स्वन-परिवर्तन के कुछ उदाहरण संस्कृत के विकासक्रम के संबंध में ढूँढ सकते हैं आप? ढँूढिये और बताइए?

7. हिन्दी और अंग्रेजी के क्रियापदों की तुलना कीजिए। हिन्दी और अंग्रेजी के नियम परस्पर संबद्ध हैं या भिन्न?

8. भाषा और लिपि के अंतःसंबंध पर विचार करते हुए हिन्दी अंग्रेजी की लिपि के कुछ उदाहरण दीजिए।

मानक हिन्दी वर्णमाला :
1. स्वर : अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ,
अनुस्वार अं
विसर्ग : अः
2. व्यंजन : क ख ग घ
च छ ज झ
ट ठ ड ढ
त थ द ध
प फ ब भ म
य र ल व
श ष स ह
पंचम व्यंजन - ङ (क वर्ग)
ञ (च वर्ग)
ण (ट वर्ग)
न (त वर्ग)
म (प वर्ग)
संयुक्त व्यंजन- क्ष त्र ज्ञ, त्र
देवनागरी अंक- 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
हल चिन्ह् ्

वाक्य/शोधन/पद बंध/कारक/विन्यास

विषय :

अभी तक हमने विभिन्न इकाइयों में ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य की जानकारी प्राप्त की। अब हम इस इकाई में वाक्य (जिसे भाषा की बड़ी इकाई माना गया है) संबंधी जानकारी प्राप्त करेंगे। वाक्य के विभिन्न अंगों के संबंध में भी हम बातचीत कर चुके हैं। यहाँ इस खण्ड में हम अभ्यास (Practice) करेंगे ताकि विभिन्न वाक्यों के मध्य छिपे खण्डों को पहचान सकें तथा वाक्यों के विभिन्न स्तरों की जानकारी प्राप्त कर सकें

विषय क्षेत्र

शुद्धता भाषा की आवश्यक शर्त है। उच्चरित भाषा में होने वाली भूल फिर भी क्षम्य है परन्तु लिखित भाषा में की गई किसी भी प्रकार की भूल क्षम्य नहीं है। लिखित भाषा वाक्य के समस्त अंगों की शुद्धि की मांँग करती है। विभिन्न पदों के साथ कारक, वाक्य विन्यास, पदक्रम की शुद्धि अत्यंत आवश्यक है।

वाक्य के अंतर्गत यदि पदों का विन्यास ठीक न हो तो वाक्य के अर्थ का अनर्थ हो सकता है। सार्थकता वाक्य की अनिवार्य शर्त है। अर्थ ग्रहण न होने पर वाक्य का प्रयोग निरर्थक हो जाता है। वाक्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इस क्षेत्र में पूर्ण सिद्धि के सिद्ध छः तत्वों का ज्ञान आवश्यक है-

1. सार्थकता
2. योग्यता
3. आकांक्षा
4. आसक्ति
5. पदक्रम
6. अन्वय

इन तत्वों के आधार पर ही वाक्य को समझा जा सकता है।

विषय प्रवेश :

वाक्य के अंतर्गत सार्थक शब्दों का संग्रह आवश्यक है। वाक्य शोधन की समझ के लिए शब्दों का सही क्रम आवश्यक है। यँू तो कर्ता, कर्म, क्रिया के होने से ही वाक्य पूर्ण होता है परन्तु कई बार एक शब्द के भी वाक्य होते हैं। ऐसे वाक्य अक्सर बातचीत में प्रयुक्त किए जाते हैं-

1. तुम्हारा नाम क्या है?

(मेरा नाम) क ख ग (है)

(तुमने) कहाँ तक पढ़ाई की है?

(मैंने) ग्रेजुएशन (तक पढ़ाई की है)

किस पोस्ट पर काम कर सकते हो?

ब्रेकेट में लिखे गए वाक्य को यदि न भी लिखा जाए तो भी अर्थ प्रेषित होने में कोई समस्या नहीं है।
सार्थकता : अर्थात् वाक्य में सार्थक शब्दों का प्रयोग होना आवश्यक है। निरर्थक शब्दों से वाक्य रचना संभव नहीं। सार्थकता का अर्थ मात्र शब्दों की सार्थकता से ही नहीं है बल्कि प्रसंगानुरूप सार्थकता से भी है यथा-
आपने मुझे कुछ भी दिया।
वाक्य में शब्द सार्थक नहीं है क्योंकि यह अर्थ प्रेषित करने में समर्थ नहीं है। यहाँ प्रयोग के स्तर पर-
आपने मुझे कुछ दिया।
आपने मुझे कुछ भी नहीं दिया।
वाक्य सार्थक हैं।
योग्यता : प्रसंगानुकूल सार्थकता को योग्यता कहा जाता है। प्रसंग के अनुरूप अर्थ देने की शक्ति वाक्य के लिए अत्यावश्यक है। यथा- अगर दो व्यक्तियों में बातचीत हो रही है तो वह बातचीत दोनों व्यक्तियों के लिए तो सम्प्रेष्य होगी परन्तु किसी अन्य व्यक्ति के लिए नहीं। यह वाक्य सार्थक माने जाएँगे क्योंकि उन दो व्यक्तियों की बातचीत में किसी तीसरे व्यक्ति की आवश्यकता नहीं। बातचीत प्रसंग के अनुकूल उन दोनों व्यक्तियों के लिए सार्थक है यथा-
"फोन जरूर करना।
चल ठीक है।
और वो जरूर भेज देना
हाँ हाँ
और ध्यान रखना अपना
हाँ फोन करूँगी
उसे जरूरी बता देना....।'
यह प्रसंग स्वयं में योग्यता का निर्वाह करता है क्योंकि प्रसंगानुकूल दोनों व्यक्ति एक दूसरे की बातचीत समझ सकते हैं।
आकांक्षा : अर्थात वाक्य में अपने आप में पूर्णता होनी चाहिए। कर्ता, कर्म, क्रिया का निर्वाह करने वाला वाक्य ही स्वयं में पूर्ण होता है। यथा-

उन्होंने मुझे बनाया
कर्ता कर्म क्रिया
यह वाक्य अपने आप में पूर्ण है। अतः इसे वाक्य माना जाएगा।

आसक्ति : अर्थात् वाक्य के शब्दों में परस्पर निकटता होनी चाहिए। वाक्य में मात्र कर्ता, कर्म, क्रिया का निर्वाह ही आवश्यक नहीं है बल्कि इनका साथ-साथ आना भी आवश्यक है यथा-

कुल तुम मेरे घर आना
कर्ता कर्म क्रिया

इस वाक्य का एक साथ उच्चारित होना आवश्यक है अन्यथा कर्ता (कल तुम) का उच्चारण, कुछ क्षण बाद कर्म (मेरे घर) का उच्चारण कुछ समय पश्चात् क्रिया (आना) के उच्चारण से वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं होता।
पदक्रम :

वाक्य के अंतर्गत मात्र सार्थक शब्दों का ही होना आवश्यक नहीं है, उनका क्रम से आना भी आवश्यक है। क्रम से न आने पर वाक्य का अर्थ भी स्पष्ट नहीं होता, कई बार वाक्य हास्यास्पद भी हो जाता है यथा-

शीघ्रता से नहीं तुमने किया काम
विस्तार कर्ता क्रिया कर्म
निकलता है चाँद रात को
क्रिया कर्ता कर्म
इन वाक्यों को समझने में कठिनाई तो नहीं है परंतु यह भाषा के नियमों के अनुसार नहीं बने हैं। कई वाक्य तो हास्यास्पद भी हो जाते हैं-
बच्चों को काटकर फल खिलाओ।
प्रत्येक भाषा के पदक्रम संबंधी नियम भिन्न-भिन्न हैं। हिन्दी कर्ता, कर्म, क्रिया के अनुसार कार्य करती है तो अंग्रेजी में-
कर्ता, क्रिया, कर्म
Ram eats food
का पालन किया जाता है।

विषय-प्रतिपादन :

विषय प्रतिपादन के अंतर्गत हम लगातार वाक्य शोधन की प्रक्रिया को व्यावहारिक स्तर पर जानने का प्रयास करेंगे-

वाक्य शोधन :

अनेक बार एक ही प्रकार के शब्द के लिए अनेक शब्दों का प्रयोग कर दिया जाता है- कई बार अज्ञानतावश तो कई कई बार जान-बूझकर इन शब्दों का प्रयोग कर दिया जाता है। ऐसे वाक्यों को शुद्ध करना सरल नहीं है। विद्यार्थियों को ऐसे वाक्यों की शुद्धि करना सीखना अत्यंत महत्वपूर्ण है यथा-

1. तुम सुंदर लड़कियों में भी सुंदर हो।
सही वाक्य तुम लड़कियों में सुन्दरतम हो।
तुम सुन्दर लड़कियों में भी सुन्दरतम हो।
2. गार्ड रेल की देखरेख रखवाली करता है।
सही वाक्य- गार्ड रेल की देखरेख करता है।
गार्ड रेल की रखवाली करता है।
3. तुम बिल्कुल अज्ञानी मूर्ख हो।
सही वाक्य- तुम बिल्कुल अज्ञानी हो।
तुम बिल्कुल मूर्ख हो।
4. उसने गंजी बनियान पहनी है।
सही वाक्य- उसने गंजी पहनी है।
उसने बनियान पहनी है।
5. वह बहुत ही खूबसूरत सुंदर है।
सही वाक्य- वह बहुत ही खूबसूरत है।
वह बहुत ही सुन्दर है।
6. वह बहुत ही बुजुर्ग वृद्ध व्यक्ति हैं।

सही वाक्य- वह बहुत ही बुजुर्ग व्यक्ति हैं।
वह बहुत ही वृद्ध व्यक्ति हैं।
7. अपनी मातृभाषा को हेय, नीचा समझना हमारी भूल है।
सही वाक्य अपनी मातृभाषा को हेय समझना हमारी भूल है।
अपनी मातृभाषा को नीचा समझना हमारी भूल है।
8. महात्माओं के जीवन से हमें बड़ी सीख और शिक्षा मिलती हैं।
सही वाक्य- महात्माओं के जीवन से हमें बड़ी सीख मिलती है।
महात्माओं के जीवन से हमें बड़ी-शिक्षा मिलती हैं।

इसी प्रकार वाक्य के स्तर पर सबसे प्रमुख समस्या **पदक्रम** के स्तर पर दिखाई देती है। पदों का सही क्रम वाक्य के अर्थ को पूर्णता देता है साथ ही भाषा संबंधी नियमों का भी अनुपालन भी होता है। पद क्रम भाषा की महत्वपूर्ण इकाई है अतः इसमें किसी प्रकार की अशुद्धि होना उचित नहीं है यथा-

1. नहीं मान रहा है किसी भी प्रकार वह।
वह किसी भी प्रकार नहीं मान रहा है
2. उसका बना है मकान भी अब वहीं हुआ
उसका मकान अब भी वहीं बना हुआ है।
3. भी खाने को उसे मिलती रोटी नहीं।
उसे खाने को रोटी भी नहीं मिलती।
4. चप्पल पहनकर चला वह गया।
वह चप्पल पहनकर चला गया।
5. आँखों से आँसू उसकी गिर गए/ पड़े।
उसकी आंखों से आँसू गिर गए/पड़े।

इसी प्रकार वाक्य के स्तर पर एक महत्वपूर्ण समस्या अन्वय की है। अन्वय का अर्थ है- लिंग, वचन, पुरुष, काल, क्रियाके साथ मेल। इनमें से किसी भी स्तर पर होने वाली अशुद्धि वाक्य के स्तर पर भ्रम उत्पन्न करती है।

लिंग के स्तर पर : संस्कृत में तीन लिंग स्वीकार किए गए थे-

पुल्लिंग- राम

स्त्रीलिंग-सीता

नपुंसक लिंग- कोई वस्तु या पदार्थ

परन्तु हिन्दी में दो लिंगों की ही संकल्पना मिलती है-

स्त्रीलिंग पुल्लिंग

क्रिया का प्रयोग लिंग के अनुरूप ही किया जाता है यथा

स्त्रीलिंग- वह (स्त्री) जाती है।

पुल्लिंग- वह (पुरुष) जाता है।

अंग्रेजी में लिंग के अनुरूप क्रिया में परिवर्तन नहीं होता-

He eats a fruit.

She eat a fruit

वाक्य के स्तर पर लिंग का ज्ञान अशुद्धियों को समाप्त करना है- यथा-

	राम	खाना	खा		रहा है।
राम	घर	जा			रहा है।
	राम	खाना			खाएगा।
	राम	घर			गया।
	सीता	खेल			खेलती है।
	नेहा	पुस्तक			पढ़ती है।

यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि कर्म का प्रभाव क्रिया पर नहीं हो रहा क्योंकि वाक्य कर्ता प्रधान है। कर्ता प्रधान वाक्यों में कर्ता के लिंग के अनुसार क्रिया बनाई जाती है।

वचन : संस्कृत में तीन प्रकार के वचन माने गए हैं-

1. एकवचन 2,द्विवचन 3 बहुबचन

हिन्दी में यद्यपि तीनों ही वचन मिलते हैं परन्तु अधिकांशतः एकवचन, बहुवचन का ही प्रयोग अधिक होता है-

एकवचन :

वह जा रहा है।

वह जा रही है।

द्विवचन :

वे दोनों जा रहे हैं।

वे दोनों जा रही हैं।

बहुवचनः

वे जा रहे हैं। वे सब जा रहे हैं।

वे जा रहीं हैं। वे सब जा रही हैं।

द्विवचन एवं बहुवचन में अधिकांशतः एक समान क्रिया का प्रयोग होता है यथा-

हम दोनों आएँगे

हम सब आएँगे

हम आएँगे।

अंग्रेजी में एकवचन के लिए क्रिया में s,es मे का प्रयोग होता है जबकि बहुवचन में क्रिया का सामान्य प्रयोग किया जाता है।

एकवचन- He comes

She goes

बहुवचन- They come We come

They go You go

यद्यपि 'I' और 'You' बहुवचन नहीं है परन्तु I, We, You, They के लिए क्रिया के साथ S या es का प्रयोग नहीं किया जाता है।

पुरुष : प्रायः तीन प्रकार के पुरुष माने जाते हैं-

उत्तम पुरुष : मैं	हम
मध्यम पुरुष : आप	तुम
अन्य पुरुष : वे	वह

पुरुष के अनुसार ही क्रिया का स्वरूप निर्धारित होता है। पुरुष के साथ ही कर्ता के लिंग का अन्वय भी आवश्यक है यथा-

उत्तम पुरुष : मैं, हम
मैं, जा रही हूँ (स्त्रीलिंग, उत्तम पुरुष)
मैं जा रहा हूं (पुल्लिंग, उत्तम पुरुष)
मध्यम पुरुष : तुम, आप
तुम जा रहे हो?
आप जा रहे हैं? (आदर सूचक)
आप जा रही हैं। (स्त्रीलिंग, मध्यम पुरुष)
अन्य पुरुष : वह, वे
वह जा रहे हैं।
वे जा रहे हैं (आदर सूचक)
वह जा रहा है।
वे सब जा रहे हैं।
वे दोनों जा रहे हैं।

इन वाक्यों में पुरुष, कर्ता व लिंग के रूप में- मैं, हम, तुम, आप, वह, वे का प्रयोग किया गया है और उसी के अनुरूप क्रिया का स्वरूप तय हुआ है।

विद्यार्थियों को यह ध्यान रखना है कि किस पुरुष रूप के साथ क्रिया का कौन सा रूप प्रयुक्त होता है।

अंग्रेजी में

& I, we

- You

- They, He का प्रयोग किया जाता है। वचन के अनुसार ही इसमें क्रिया का प्रयोग किया जाता है-

उदाहरणार्थ

I Go-	We go	you go
	They go-	He goes

अर्थात पुरुष के अनुरूप क्रिया का प्रयोग करते हुए वचन को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

काल :

काल का अर्थ है- समय। वाक्य विन्यास के अंतर्गत काल की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। समय को दृष्टिगत करते हुए क्रिया का स्वरूप तय किया जाता है। यथा

मैं खा रहा हूँ या

मैं खा रहा था।

इन दोनों वाक्यों में कर्ता, कर्म, क्रिया, वचन, पुरुष के साथ-साथ काल की अवधारणा जुड़ जाती है। पहला वाक्य वर्तमान स्थिति की सूचना दे रहा है- वर्तमान में भी लगातार उसी क्षण में चलने वाली क्रिया की सूचना दी जा रही है परन्तु दूसरा वाक्य पूर्व में घटित घटना का सूचक है। इस आधार पर काल का विभाजन तीन रूपों में किया जाता है-

1.	वर्तमान काल- है, रहा है, ता है
2.	भूतकाल - था, रहा था, या/यी
3.	भविष्यत्- होगा, रहा होगा।

वर्तमान निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया का सूचक है जबकि भूतकाल पूर्व में घटित घटनाओं का उल्लेख करता है। भविष्यत् अर्थात् आने वाले समय में होने वाली घटना।

अंग्रेजी में इसका विभाजन निम्न प्रकार से है-

Present Tense			1. Present Indefinite - (S. es)
			2. Present Continuous - (ing +is)
			3. Present Perfect - (has/have + IIIrd form)
			4. Present Perfect Continuous (Has

			been/have been + I form (ing)
Past Tense:			Indefinite-IInd form
			Continuous-was/were + ing from
			Perfect-had + IIIrd form
			Perfect Continuous-had been + ing form
Future Tense:			Indefinite-will+ 1st form
			Continuous-will be=ing form
			Perfect-willl have=IIIrd form
			Perfect Continuous - will/would have been + ing form

दोनों भाषाओं के कुछ उदाहरण देखिए-

हिन्दी- वर्तमान	
1.	वह गाँव से शहर आता है।
2.	वह गाँव से शहर आ रहा है।
3.	वह गाँव से शहर आया।

4.	वह गाँव से शहर आ चुका है।
5.	वह दो घण्टे से पढ़ रहा है।
अंग्रेजी- वर्तमान	
1. He comes to city from village	
2. He is coming to city	
3. He has come to city	
4. He has been studying from two hours.	
हिन्दी-भूतकाल	अंग्रेजी भूतकाल
1. वह, चला गया।	He went away
2. वह जा रहा था।	He was going
3. वह जा चुका था।	He had gone
4. वह दो घण्टे से पढ़ रहा था।	He had been studying
हिन्दी भविष्यत	अंग्रेजी-भविष्यत
1. वह जाएगा।	He will go
2. वह जा रहा होगा।	He will be going
3. वह जा चुका होगा।	He would have gone
4. वह दो घण्टे से पढ़ रहा होगा।	He would have been studying.
निरन्तर प्रयास के द्वारा काल की अवधारणा के अनुरूप वाक्य विन्यास का अभ्यास किया जा सकता है।	

पदबंध :

पदबंध संबंधी अध्ययन हम पूर्व इकाई में कर चुके हैं। यहाँ उससे संबंधित अशुद्धियों को दूर करने का प्रयास करेंगे-

पदबंध के संबंध में हमें यह याद रखना आवश्यक है कि पदबंध-संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया के रूप में कार्य करते हैं अतः सही पद क्रम के अनुसार संज्ञा से पूर्व संज्ञा पदबंध, सर्वनाम से पूर्व सर्वनाम पदबंध, क्रिया से पूर्व क्रिया पदबंध का प्रयोग होना चाहिए यथा-

.1. नीतू बिल्कुल नहीं पढ़ती
संज्ञा
मेरी क्लास में पढ़ने वाली, गोरे से रंग, ऊँचे कद वाली नीतू....
संज्ञा पदबंध
2. वे आज नहीं आएँगे
संज्ञा
वो लड़के जो सदा क्लास में शोर मचाते हैं वे.....
सर्वनाम पदबंध

3. वे आज जाएँगे
क्रिया
वे आज क्नॉट प्लेस घमूने जाएँगे

पदबंध:

पदबंध का प्रयोग कर्ता, कर्म, क्रिया के रूप में किया जाता है। संज्ञा पदबंध कर्ता के रूप में भी आता है, कर्म के रूप में भी। यही स्थिति सर्वनाम पदबंध की भी है। यथा-

1. वे आज घर जाएँगे
कर्म (संज्ञा)
वे आज अपने आलीशान घर जाएँगे।
कर्म का विस्तार
2. राम खाना खाएगा
कर्ता (संज्ञा)
कमल की कक्षा में पढ़ने वाला लड़का राम..

..

कर्ता का विस्तार

पदबंध के संदर्भ में पदक्रम व कर्ता, कर्म, क्रिया का ज्ञान होना आवश्यक है ताकि त्रुटियों से बचा जा सके।

कारक :

कारक का अध्ययन भी हम पूर्व इकाई के अंतर्गत कर चुके हैं। कारक के रूप में निम्न चिन्हें का प्रयोग किया जाता है-

ने, को, से, के लिए, में, पर, का, की, के, हे, अरे।

वाक्य के अंतर्गत-

कर्ता के साथ- ने का प्रयोग होता है

राम ने रावण को मारा

कर्ता कर्म

कर्ता वाक्य का प्रधान तत्व है। कर्ता, कर्म की परस्पर स्थिति में परिवर्तन होने से वाक्य का अर्थ बदल जाता है अतः कारक संबंधी नियमों का ज्ञान होना आवश्यक है।

कारक संबंधी नियमों का अध्ययन हमने मानक वर्तनी के संदर्भ में किया। उनका स्पष्टीकरण उदाहरणों के माध्यम से दिया जा रहा है-

कारक का प्रयोग या तो संज्ञा के साथ किया जाता है या सर्वनाम के साथ।

संज्ञा के साथ कारक चिन्ह् अलग लिखे जाते हैं-

1. वर्षा ने रितु को राम से मार पिटवाई।
2. चन्दू के चाचा ने चन्दू की चाची को

चाँदी के चम्मच से चाँदनी चौक में चटनी चटाई।

सर्वनाम के साथ कारक चिन्ह् साथ लिखे जाते हैं-

1. उसने उसको उससे मिलवाया।

2. मैंने उसको प्यार किया।

यदि सर्वनाम के साथ दो विभक्ति चिन्हें का प्रयोग हो तो पहली विभक्ति साथ और दूसरी अलग लिखी जाती है-

1. उसने मुझे ही बुलाया।

2. उसको ही बुलाया जाए।

3. उसके लिए फल लाओ।

विवेचन :

वाक्य के स्तर पर शुद्धता का ज्ञात आवश्यक है। वाक्य शुद्धि के लिए सर्वप्रथम अशुद्धियों की पहचान होनी चाहिए। वाक्य के अध्ययन के संबंध में होने वाली विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों का हमने अध्ययन किया।

भ्ाषा के अंतर्गत सुस्पष्ट उच्चारण जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण है- लेखन पक्ष/लेखन जितना स्पष्ट, सुविचारित, सुनियोजित होगा, व्यक्ति के व्यक्तित्व के उतने ही बेहतरीन पहलुओं को उजागर कर सकेगा। यही कारण है कि शुद्ध वाक्य व्यक्तित्व का परिचायक होता है।

आज का समय निरन्तर सघर्ष व क्रियाशीलता का है। जीवन अत्यंत व्यस्त है और समय की कमी होती जा रही है। ऐसे में समाचार पत्र, पत्रिकाएँ इतनी शीघ्रता से प्रकाशित होती है कि उसमें अशुद्धियाँ होना स्वाभाविक है। शुद्ध वाक्य रचना का ज्ञान होने से ऐसे अशुद्धियों से बचाव संभव है।

शिक्षा मनुष्य के समक्ष ज्ञान के अनन्त द्वार खोलती है। शिक्षित होने का अर्थ औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों स्तरों पर होने वाले ज्ञान से है। अनौपचारिक व्यवहार में भी सभ्य ढंग से क्रिया-प्रतिक्रिया करने की शक्ति भाषा के ज्ञान के माध्यम से ही प्राप्त होती है। औपचारिक स्तर पर भी किसी विशेष प्रकार के वक्तव्य की तैयारी, भाषण देने एवं औपचारिक प्रतिक्रिया में भी मनुष्य की समझ भाषा के माध्यम से ही बनती है।

इस समझ के लिए भाषा का शुद्ध, परिमार्जित होना आवश्यक है। ध्वनि और शब्द की शुद्धि के साथ-साथ वाक्य की शुद्धता अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस इकाई में हमने वाक्य संबंधी अशुद्धियों व शुद्ध करने की विधि पर बातचीत की। वाक्य की शुद्धि के लिए मात्र शाब्दिक अशुद्धियों को दूर करना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि पदबंध, कारक, वाक्य विन्यास, पदक्रम का ज्ञान भी अत्यावश्यक है।

निष्कर्ष :

इस प्रकार इस इकाई में हमने सीखा कि-

1. वाक्यों के ज्ञान के लिए उसकी विभिन्न इकाइयों से परिचित होना आवश्यक है यथा- सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा आदि।

2. वाक्य में यद्यपि कर्ता, कर्म, क्रिया का होना अपेक्षित है परन्तु कई बार एक शब्द का भी वाक्य बन सकता है।

3. वाक्य के समस्त शब्दों का सार्थक होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि प्रसंगानुकूल योग्यता का भी होना अत्यावश्यक है।

4. वाक्य के समस्त पदों का क्रम सार्थक होना आवश्यक है। प्रत्येक भाषा का अपना निश्चित पदक्रम होता है। भाषा के अनुरूप पदों का सही क्रम से आना आवश्यक है।

5. वाक्य लिखते समय एक ही प्रकार के शब्दों का प्रयोग एकाधिक बार होना अशुद्धि मानी जाती है। अतः ऐसे प्रयोग से बचना चाहिए।

6. भाषिक शुद्धि के लिए लिंगानुरूप क्रिया का प्रयोग होना चाहिए।

7. वचन, पुरुष की अवधारणा का ज्ञान वाक्य शुद्धि के लिए आवश्यक है।

8. काल की अवधारणा वाक्य को वैशिष्ट्य प्रदान करती है। वर्तमान, भूतकाल व भविष्यकाल का ज्ञान वाक्यों को शुद्ध करने के लिए जरूरी है।

9. पदबंध-संज्ञा के रूप में भी आते हैं सर्वनाम के रूप में भी। इनका प्रयोग कर्ता व कर्म के रूप में किया जा सकता है।

10. कारक का ज्ञान संज्ञा व सर्वनाम के प्रयोग के लिए आवश्यक है। संज्ञा के साथ कारक का प्रयोग अलग से किया जाता है जबकि सर्वनाम के साथ कारक का प्रयोग साथ में किया जाता है।

11. सर्वनाम के साथ पहली विभक्ति जोड़कर लिखी जाती है जबकि दूसरी विभक्ति अलग लिखी जाती है।

प्रश्नोत्तर :

1. 'सार्थकता' से क्या अभिप्राय है। 'सार्थकर्ता' और 'योग्यता' का सह संबंध बताइए।
2. आसक्ति का अभिप्राय समझाइए। उदाहरण देकर अपनी बात को स्पष्ट करें।
3. पदक्रम से आशय समझाइए। हिन्दी भाषा का पदक्रम स्पष्ट करें।
4. लिंग की अवधारणा से आप क्या समझते हैं। हिन्दी में कितने प्रकार के लिंग माने गए हैं।
5. वचन कितने प्रकार के हैं? द्विवचन और बहुवचन में अंतर समझाइए।
6. 'पुरुष' की संकल्पना समझाइए। पुरुष के साथ क्रिया का संबंध समझाइए।
7. हिन्दी में 'काल' की अवधारणा पर विचार करते हुए अंग्रेजी के Tense के साथ उसका संबंध बताइए।
8. संज्ञा एवं सर्वनाम के साथ कारक चिन्हें का प्रयोग समझाइए।

प्रयोगात्मक प्रश्न :

1. बाजार में पहुँचकर कपड़े खरीदने के लिए एक स्त्री किसी दुकान में पहुँचती है। वहाँ दो व्यक्तियों में होने वाली बातचीत को वाक्यों में लिखें।

2. काल की अवधारणा समझाते हुए हिन्दी के वर्तमान काल संबंधी निम्न वाक्यों को शुद्ध करें व अंग्रेजी में उनका अनुवाद करें-

(क) वह मेरे घर चला आया।

(ख) वह तीन दिन से घूम रहा था

(ग) वह मेरे घर आ चुका होगा।

3. निम्न में संज्ञा पदबंध का कर्म के रूप में विस्तार करें-

(क) वह------ कार्य करती है।

(ख) वह------ प्रयत्न कर रहा है।

(ग) उसे------ सफलता मिलेगी।

4. पुरुष छाँटिये-

(क) मैं खा रहा हूँ

(ख) वे जा रहे हैं।

(ग) वे सब मुझसे मिलने आएँगे।

5. वचन के अनुरूप क्रिया का प्रयोग करें-

(क) वह मेरे घर-----।

(ख) वे मुझसे दूर----।

(ग) हम दोनों चले-----।

संवाद के बिन्दु

आपने अभी वाक्य शोधन की प्रक्रिया का अध्ययन किया। इस अध्ययन के पश्चात कुछ प्रश्न आपके मन में भी आए होंगे। आइए इन प्रश्नों को आपसी बातचीत से हल करने का प्रयास करें-

1. वाक्य शोधन की प्रक्रिया का अध्ययन कराते हुए हमने आपके समक्ष विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों को दर्शाया। इसके अतिरिक्त आपके समक्ष कितने प्रकार की अशुद्धियाँ आई हैं?
2. वाक्य के संदर्भ में पदक्रम का आपकी दृष्टि में कितना महत्व है? भाषा के नियमों के अतिरिक्त क्या वाक्य का अर्थ ग्रहण किया जा सकता है?
3. वस्तु या पदार्थ की संकल्पना नपुंसक लिंग के रूप में होनी चाहिए अथवा स्त्रीलिंग/पुल्लिंग की संकल्पना में ही वस्तु को स्वीकार किया जा सकता है?
4. किसी उदाहरण (रचनात्मक) के माध्यम से 'योग्यता' को समझाइए। उपन्यास या कहानी का कोई अंश लीजिए।

रचनात्मक योगदान :

आपने इस खण्ड को पढ़ा। इस खण्ड को पढ़कर वाक्य शुद्धि का आपको ज्ञान हुआ। अब एक छोटा सा प्रयास करें- किसी रचना को पढ़े। रचना के प्रथम पाँच पृष्ठों का चुनाव करें। इन पृष्ठों में वाक्यों का चुनाव करके लिंग, वचन, कारक, पदबंध ढूँढे। यदि इस कार्य में आपकी रचनात्मकता का योगदान हो जाए तो और भी अच्छा।

जैसे-

रविवार का दिन आया। चिड़िया तिनका पकड़ लाई।

तिनका-तिनका लाकर घर बनाया।

अखिल डलिया भरकर दाना लाया।

चिड़िया दाना खाकर उड़ गई।

छवि साइकिल पर बाजार गई।

नारियल, किशमिश, मिठाई लाई।

अतिथि आया।

मिठाई खाकर रविवार का दिन बिताया।

(साभार : भाषा माधुरी (पुस्तक) कक्षा-1 प्रकाशन- डीएसी कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति)

उदाहरण :

रविवार		का	दिन	आया- लिंग, वचन, कर्ता, कर्म, क्रिया।		
कर्ता			कर्म	क्रिया		कारक
एक वचन			क्रिया			

	कारक					
नपुंसक लिंग (संस्कृत नियमानुसार)						

पुर्ल्लिंग (हिन्दी भाषा नियमानुसार)

प्रयास कीजिए। इनमें से कोई शब्द, कोई वाक्य पसन्द आए तो कविता, कहानी की रचना करके हमें भेज दीजिए। प्रतीक्षा रहेगी।

कर्ता	कर्म	क्रिया
चिड़िया	तिनका	पकड़ लाई
(शून्य कारक)		
स्त्रीलिंग	पुर्ल्लिंग (एकवचन)	
(एकवचन)		

समाप्त